জনতাৰ কথা জনতাৰ মাজলৈ সাপ্তাহিক
জন জন বিচাৰ

जन जन की बात जन जन तक साप्ताहिक
जन जन विचार

WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER
Language : Hindi, Assamese & English
WEBSITE : www.janjanvichar.in

VOICE OF ALL, FOR ALL WEEKLY
JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 12 June 2026 :: Year-1, Vol-22, Issue-1 ::शुक्रवार। 12 जून 2026। शक संवत 1948। ज्येष्ठ। कृष्ण। द्वादशी। :: पृष्ठ-20। मूल्य - 15 रुपए

जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

जन जन विचार : तीन भाषाओं में एक नई उड़ान

प्रिय पाठको,

किसी भी समाचार पत्र की वास्तविक शक्ति उसके पन्नों में छपे शब्दों में नहीं, बल्कि उन पाठकों के विश्वास में होती है जो उसे अपना मानते हैं। 'जन जन विचार' को मिला आपका यही विश्वास हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा है। आज हम एक ऐसे नए अध्याय की शुरुआत कर रहे हैं, जो केवल हमारे समाचार पत्र का विस्तार नहीं, बल्कि हमारी सोच और प्रतिबद्धता का भी विस्तार है। अब 'जन जन विचा' हिंदी, असमिया और अंग्रेजी-तीन भाषाओं में आपके बीच उपस्थित होगा।

असम और पूर्वोत्तर भारत विविध भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का संगम है। यहां हर भाषा अपने साथ एक इतिहास, एक संवेदना और एक पहचान लेकर चलती है। हमारा मानना है कि पत्रकारिता शेष पृष्ठ 2 पर

आर्य नगर कांड की आंच में झूलस रहा पूरा असम

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

गुवाहाटी के आर्य नगर में हुई हिंसक घटना अब केवल एक स्थानीय विवाद नहीं रह गई है। नशे के कथित कारोबार के खिलाफ शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन देखते ही देखते झड़प, राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप, पत्रकारों पर हमले के आरोप और असमिया-बिहारी संबंधों को लेकर नई बहस का केंद्र बन गया है। घटना ने पूरे राज्य का ध्यान अपनी ओर खींचा है और विभिन्न पक्षों के दावों के बीच सच्चाई जानने की मांग तेज हो गई है।

दूसरी ओर, विवाद को असमिया-बिहारी टकराव का रूप देते हुए कुछ स्वार्थी तत्व अपनी रोटियां सेंकने में जुट गए हैं। इस घटना की आड़ में 'बिहारी भगाओ' अभियान छेड़ने की कोशिश हो रही है। हालांकि सरकार और प्रशासन ने समय रहते मामले में हस्तक्षेप किया फलस्वरूप स्थिति काबू में है। हालांकि

आर्यनगर समेत महानगर के विभिन्न इलाकों में रह रहे हिंदीभाषियों में किसी अनहोनी का खौफ है।

गौरतलब है कि गत 7 जून को आर्य नगर क्षेत्र में स्थानीय लोगों ने कथित गांजा कारोबार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार स्थिति उस समय तनावपूर्ण हो गई जब दो समूह आमने-सामने आ गए। झड़प में कई लोग घायल हुए, जिनमें पुलिसकर्मी और मीडिया कर्मी भी शामिल बताए गए हैं। एक वाहन को भी क्षति पहुंचाई गई। शेष पृष्ठ 5 पर

सोशल मीडिया और गैर-जिम्मेदाराना रिपोर्टिंग ने बढ़ाया विवाद

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

आर्य नगर (शराबभट्टी) में हाल ही में हुई हिंसक घटना को लेकर पैदा हुए व्यापक जनाक्रोश और विरोध प्रदर्शनों के बीच गुवाहाटी पुलिस ने महत्वपूर्ण खुलासा करते हुए कहा है कि यह मामला किसी जातीय या भाषाई संघर्ष से जुड़ा नहीं, बल्कि कथित तौर पर रंगदारी (एक्सटॉर्शन) से जुड़े विवाद का परिणाम है।

पुलिस के अनुसार, इस मामले में नामित दो आरोपियों जितेंद्र सालोई और विशाल चौधरी के खिलाफ पहले से ही रंगदारी के कई मामले दर्ज हैं। पश्चिम गुवाहाटी के डीसीपी बोलिन देउरी ने प्रेस वार्ता में बताया कि जांच के दौरान ऐसे कई साक्ष्य मिले हैं, जिनसे संकेत मिलता है कि

आरोपियों ने स्वयं को बचाने और कानूनी कार्रवाई से बच निकलने के लिए इस घटना को 'असमिया बनाम गैर-असमि' संघर्ष का रूप देने का प्रयास किया।

गौरतलब है कि आर्य नगर में प्रारंभिक विरोध प्रदर्शन कथित नशा तस्करी और मादक पदार्थों के कारोबार के खिलाफ शुरू हुआ था। लेकिन बाद में यह विवाद तेजी से भावनात्मक और सामाजिक रंग लेने लगा। सोशल मीडिया पर कई तरह के दावे और आरोप प्रसारित हुए, जिनमें असमिया विरोधी नारों की बात भी कही शेष पृष्ठ 5 पर

असमिया-बिहारी संघर्ष नहीं, यह उगाही का मामला : पीयूष हजारिका

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी/होजाई

गुवाहाटी के आर्य नगर में हुई विवादित घटना को लेकर असम की राजनीति और समाज में जारी बहस के बीच राज्य के कैबिनेट मंत्री पीयूष हजारिका ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि इस मामले को असमिया बनाम बिहारी संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करना गलत है और पुलिस की प्रारंभिक जांच के अनुसार यह मुख्य रूप से उगाही (एक्सटॉर्शन) से जुड़ा मामला प्रतीत होता है।

होजाई में पत्रकारों से बातचीत करते हुए मंत्री ने कहा कि उन्होंने घटना स्थल नहीं देखा है, लेकिन गुवाहाटी पुलिस के डीसीपी बोलिन देउरी के आधिकारिक बयान के आधार पर यह मामला उगाही से

जुड़ा नजर आता है। उन्होंने कहा कि यदि यह असमिया और बिहारी समुदायों के बीच का विवाद नहीं है, तो इसे सांप्रदायिक या जातीय रंग देने की कोई आवश्यकता नहीं है।

विवाद पर आसू का आक्रोश

आर्य नगर में हुई हिंसक झड़प को लेकर असम की राजनीति और सामाजिक संगठनों की प्रतिक्रिया लगातार तेज होती जा रही है। ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) ने इस मामले में कड़ी नाराजगी जताते हुए न्याय मिलने तक आंदोलन जारी रखने की शेष पृष्ठ 5 पर

बिहारी नहीं, असमिया भी : पहचान, समन्वय और भविष्य की चुनौती

जन जन विचार
...✍ गोपाल चंद्र झा

हाल के दिनों में असम में 'बिहारी', 'बहिरागत' और 'खिलंजिया' जैसे शब्दों को लेकर राजनीतिक और सामाजिक बहस तेज हुई है। सोशल मीडिया से लेकर सार्वजनिक मंचों तक पहचान की राजनीति ने एक बार फिर समाज को विभाजित करने वाले प्रश्नों को सामने ला खड़ा किया है। ऐसे समय में इतिहास की ओर देखना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि इतिहास केवल अतीत नहीं बताता, वह भविष्य की दिशा भी दिखाता है।

असम का इतिहास समन्वय और सांस्कृतिक आत्मसात की एक लंबी परंपरा का साक्षी रहा है। इस भूमि ने विभिन्न समुदायों, भाषाओं और क्षेत्रों से आए लोगों को अपनाया है। यही कारण है कि आज जिस असमिया समाज को हम जानते हैं, वह अनेक सांस्कृतिक धाराओं के संगम से निर्मित हुआ है।

इस संदर्भ में आधुनिक असम के महान साहित्यकार, इतिहासकार और शिक्षाविद् डॉ. सूर्य कुमार भुइयां का उदाहरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। असम साहित्य सभा के अध्यक्ष रहे, कॉटन कॉलेज के प्रथम असमिया प्राचार्य बने और असम के इतिहास तथा साहित्य पर अमूल्य ग्रंथों की रचना करने वाले डॉ. भुइयां को आज पूरा असम गर्व के साथ अपना मानता है। किंतु उनके पूर्वज मूल रूप से बिहार के पूर्णिया क्षेत्र से आए थे। समय के साथ उनका परिवार असम की संस्कृति, भाषा और समाज में इस प्रकार घुल-मिल गया कि उनकी पहचान केवल और केवल असमिया बन गई।

यह उदाहरण बताता है कि किसी व्यक्ति या परिवार का मूल्यांकन उसके पूर्वजों के आधार पर नहीं, बल्कि समाज के प्रति उसके योगदान और वर्तमान पहचान के आधार पर होना चाहिए। असम की शक्ति इसी समावेशी दृष्टिकोण में निहित रही है।

हालांकि इसका अर्थ यह नहीं कि स्थानीय और स्वदेशी समुदायों की चिंताओं को नजरअंदाज किया जाए। भूमि, रोजगार, भाषा और सांस्कृतिक अधिकारों की सुरक्षा किसी भी समाज की वैध अपेक्षा होती है। असम के मूल निवासियों के हितों की रक्षा के लिए मजबूत राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक ढांचे की आवश्यकता है। लेकिन इसका समाधान किसी समुदाय के प्रति घृणा या टकराव नहीं हो सकता।

इतिहास गवाह है कि संघर्ष समाज को कमजोर करता है, जबकि समन्वय उसे मजबूत बनाता है। 'गो बैक' के नारों से न तो समस्याएं समाप्त होती हैं और न ही भविष्य सुरक्षित होता है। आवश्यकता इस बात की है कि असम अपने बहुलतावादी चरित्र को बनाए रखते हुए स्थानीय हितों की रक्षा के लिए व्यावहारिक और दीर्घकालिक नीतियां विकसित करे।

आज असम के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं है कि कौन कहां से आया, बल्कि यह है कि कौन इस भूमि के विकास, शांति और समृद्धि में सहभागी बनना चाहता है। यदि समाज संवाद, सहयोग और संवेदनशीलता का मार्ग चुनता है, तो असम की सांस्कृतिक अस्मिता भी सुरक्षित रहेगी और उसका भविष्य भी उज्ज्वल होगा।

समन्वय ही समाज बनाता है, संघर्ष केवल दीवारें खड़ी करता है। असम के भविष्य का रास्ता भी इसी समन्वय से होकर गुजरता है।

सिलचर : आईएसबीटी रोड पर जलभराव से बढ़ी परेशानी

सिलचर। यहां के रामनगर आईएसबीटी रोड पर जलनिकासी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण बारिश का पानी सड़क पर जमा हो रहा है, जिससे आम लोगों और वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों के अनुसार फ्लाईओवर निर्माण कार्य और नाले के अवरुद्ध होने के कारण बारिश का पानी निकल नहीं पाता, जिससे सड़क पर बड़े गड्ढों में पानी भर जाता है। क्षेत्रवासियों का कहना है कि इस मार्ग से प्रतिदिन स्कूल-कॉलेज के छात्र, ऑटो चालक और अन्य वाहन चालक गुजरते हैं। जलभराव के कारण सड़क दुर्घटनाओं का खतरा लगातार बना रहता है तथा कई लोग घायल भी हो चुके हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि पानी से भरे गड्ढों में वाहन फंसने और पलटने की घटनाएं भी सामने आई हैं।

श्री अमरनाथ सेवा समिति के अध्यक्ष बने विनय पाठक

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

श्री अमरनाथ सेवा समिति, बेलतला की नई कार्यकारिणी के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से विनय पाठक का चुनाव किया गया। यह चुनाव गत 5 जून को शाम 7 बजे समिति के सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान आयोजित किया गया। समिति के संयोजक उमेश कुमार साह ने बताया कि यह चुनाव 26 वर्षों में पहली बार ऐतिहासिक रूप से संपन्न हुआ है। चुनाव से पूर्व 3 अप्रैल को शाम 7.30 बजे समिति की आम सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें समिति के अध्यक्ष पद पर चुनाव कराने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की रूपरेखा पर भी चर्चा की गई।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समिति के सदस्य उपस्थित रहे। आयोजकों ने सभी का स्वागत किया और आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।यह चुनाव समिति के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर माना जा रहा है, जिससे संगठन को नई दिशा मिलने की उम्मीद है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

जन जन विचार : तीन भाषाओं में एक...

का उद्देश्य केवल घटनाओं का विवरण देना नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों को संवाद के एक साझा मंच पर लाना भी है। यही सोच हमें त्रिभाषीय प्रकाशन की ओर लेकर आई है।

हिंदी हमारी व्यापक जनभावनाओं की भाषा है, असमिया इस धरती की आत्मा है और अंग्रेजी आधुनिक विश्व से संवाद का सशक्त माध्यम। जब ये तीनों भाषाएं एक ही मंच पर मिलेंगी, तब समाचार केवल पढ़े नहीं जाएंगे, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के बीच विचारों का सेतु भी बनेंगे।

हमारा संकल्प है कि भाषा चाहे कोई भी हो, पत्रकारिता के मूल मूल्य-सत्य, निष्पक्षता, जनसरोकार और लोकतांत्रिक चेतना-अपरिवर्तित रहेंगे। हम हर उस आवाज को स्थान देने का प्रयास करेंगे जो समाज के निर्माण, जागरूकता और सकारात्मक परिवर्तन की पक्षधर है।

इस नई यात्रा में हम आपको केवल पाठक नहीं, बल्कि अपने सहयात्री मानते हैं। आपका स्नेह, सुझाव और मार्गदर्शन ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है।

आइए, भाषाओं की सीमाओं से ऊपर उठकर विचारों की इस साझा यात्रा में साथ चलें। क्योंकि हमारी भाषाएं भले अलग हों, लेकिन हमारा उद्देश्य एक है- जनहित, जनजागरण और जनविश्वास।

साप्ताहिक राशिफल

12 से 18 जून 2026 ।। विक्रम संवत 2083-**मास** : ज्येष्ठ, **पक्ष** : कृष्ण, **तिथि** : द्वादशी

इस सप्ताह करियर में नई जिम्मेदारियाँ मिल सकती हैं। मेहनत का अच्छा परिणाम मिलेगा। परिवार में किसी बात को लेकर हल्का तनाव हो सकता है।

यह सप्ताह आपके लिए सकारात्मक रहेगा। रुके हुए काम पूरे होंगे और आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं।

कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी लेकिन सफलता भी मिलेगी। खर्चों पर नियंत्रण रखें। पुराने मित्र से मुलाकात लाभदायक रहेगी। रिश्तों में गलतफहमी से बचें।

यह सप्ताह मानसिक शांति और राहत लेकर आएगा। परिवार का सहयोग मिलेगा। नौकरी और व्यवसाय में स्थिरता बनी रहेगी।

करियर में पहचान मिलने के योग हैं। हालांकि रिश्तों में थोड़ी उलझन रह सकती है। अहंकार से बचें और धैर्य रखें। धन लाभ के अवसर मिलेंगे।

पुरानी परेशानियों से राहत मिलेगी। नौकरी में नई संभावनाएँ बन सकती हैं। स्वास्थ्य पहले से बेहतर रहेगा। छात्रों के लिए समय अनुकूल है।

मानसिक संतुलन और आत्मविश्वास बढ़ेगा। किसी महत्वपूर्ण निर्णय में सफलता मिलेगी। परिवार के साथ समय अच्छा बीतेगा।

यह सप्ताह आपके लिए खास रह सकता है। भविष्य की योजनाओं पर गंभीरता से काम करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी लेकिन मानसिक तनाव से बचना होगा।

नई ऊर्जा और उत्साह बना रहेगा। रुका हुआ धन मिलने की संभावना है। यात्रा के योग बन सकते हैं। रिश्तों में विश्वास बढ़ेगा।

भावनात्मक रूप से मजबूत महसूस करेंगे। कार्यक्षेत्र में स्थिरता रहेगी। परिवार के किसी सदस्य से सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

नई शुरुआत के संकेत हैं। करियर में बदलाव के अवसर मिल सकते हैं। मानसिक थकान महसूस हो सकती है, इसलिए आराम जरूरी है। दोस्तों से सहयोग मिलेगा।

पुरानी यादें या भावनाएँ परेशान कर सकती हैं, लेकिन परिवार का साथ मिलेगा। आर्थिक मामलों में सावधानी रखें। आध्यात्मिक गतिविधियों में मन लगेगा।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

12 जून (शुक्रवार) : प्रदोष व्रत
13 जून (शनिवार) : मास शिवरात्रि व्रत
14 जून (रविवार) : श्राद्ध अमावस्या
16 जून (मंगलवार) : करवीर व्रत

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

लालफीताशाही खत्म, कारोबार करना हुआ आसान

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

अब सिर्फ सात चरणों में शुरू होगा नया व्यवसाय
ईओडीबी पोर्टल से लालफीताशाही पर लगाम
ईओडीबी पोर्टल से निवेशकों और उद्यमियों को बड़ी राहत
निवेश और रोजगार को मिलेगा नया बल

असम सरकार ने राज्य में निवेश और उद्यमिता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए कारोबार शुरू करने की प्रक्रिया को बेहद सरल बना दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने घोषणा की है कि अब उद्यमी ईज ऑफ डूइंग बिजनेस (श्वश्चङ्क) पोर्टल के माध्यम से केवल सात आसान चरणों में अपना व्यवसाय पंजीकृत कर शुरू कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पर जानकारी साझा करते हुए कहा कि असम में व्यापार करना अब पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है। ईओडीबी पोर्टल को व्यवसाय से जुड़ी सभी आवश्यक सेवाओं के लिए 卐वन-स्टॉप सॉल्यूशन卐 के रूप में विकसित किया गया है, जहां उद्यमियों को विभिन्न विभागों के चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं होगी।

राज्य सरकार के अनुसार इस डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उद्योग स्थापित करने के लिए आवश्यक विभिन्न विभागों की स्वीकृतियां और सेवाएं एकीकृत की गई हैं। इससे कागजी कार्रवाई में कमी आएगी, पारदर्शिता बढ़ेगी और अनुमोदन प्राप्त करने में लगने वाला समय काफी कम होगा।

असम सरकार पिछले कुछ वर्षों से निवेश-अनुकूल वातावरण तैयार करने के लिए लगातार सुधारात्मक कदम उठा रही है। ऑनलाइन स्वीकृति प्रणाली, प्रक्रियाओं का सरलीकरण और निवेशकों के लिए विशेष सुविधा केंद्र जैसी पहलें इसी दिशा में की गई हैं। अब ईओडीबी पोर्टल को इन प्रयासों की अगली बड़ी कड़ी माना जा रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह पहल राज्य में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के साथ-साथ बड़े निवेशकों को भी आकर्षित करेगी। इससे रोजगार सृजन, औद्योगिक विकास और क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों को नई गति मिलने की उम्मीद है।

यह पहल राज्य सरकार के महत्वाकांक्षी निवेश अभियान 'एडवांटेज असम' को भी मजबूती प्रदान करेगी, जिसके माध्यम से विनिर्माण, बुनियादी ढांचा, नवीकरणीय ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, लॉजिस्टिक्स और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में देशी-विदेशी निवेश आकर्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।

उद्योग जगत ने भी इस कदम का स्वागत किया है। उनका कहना है कि डिजिटल माध्यम से अनुमोदन प्रक्रिया सरल होने से व्यवसाय शुरू करने की लागत और समय दोनों में कमी आएगी तथा निवेशकों का विश्वास बढ़ेगा।

असम सरकार को उम्मीद है कि नई व्यवस्था न केवल राज्य को पूर्वोत्तर भारत के प्रमुख निवेश केंद्र के रूप में स्थापित करेगी, बल्कि स्थानीय युवाओं को उद्यमिता की ओर प्रेरित कर आत्मनिर्भर असम के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

क्या है ईओडीबी पोर्टल

- एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म
- विभिन्न विभागों की स्वीकृतियां एक ही जगह
- कम कागजी कार्रवाई
- अधिक पारदर्शिता
- तेज अनुमोदन प्रक्रिया
- नए निवेशकों और स्टार्टअप्स के लिए बड़ी सुविधा

सपनों के जाल में फंसी असम की बेटियां

भोजपुरी फिल्मों में काम दिलाने का झांसा, नाबालिग लड़कियां भी बन रहीं शिकार
बिहार के अवैध ऑर्केस्ट्रा गिरोहों से दो वर्षों में 40 से अधिक लड़कियां मुक्त

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

एक ओर भारतीय रिजर्व बैंक असम को देश की सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल बता रहा है, वहीं दूसरी ओर राज्य की बेटियां आज भी मानव तस्करी के संगठित गिरोहों का शिकार बन रही हैं। भोजपुरी फिल्म उद्योग में काम दिलाने और रातोंरात सितारा बनाने के सपने दिखाकर असम की लड़कियों को बिहार ले जाने का भयावह खेल लगातार जारी है। पिछले कुछ वर्षों में बिहार के विभिन्न क्षेत्रों से असम की 40 से अधिक लड़कियों को बचाया जा चुका है। इनमें कई नाबालिग भी शामिल हैं।

जानकारी के अनुसार तस्कर लड़कियों और उनके परिवारों को यह विश्वास दिलाते हैं कि उनकी प्रतिभा को भोजपुरी फिल्मों में अवसर मिलेगा। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल करने और फिल्म निर्माताओं तक पहुंचाने का लालच देकर उन्हें बिहार ले जाया जाता है। लेकिन वहां पहुंचने के बाद अधिकांश लड़कियों को अवैध ऑर्केस्ट्रा समूहों में धकेल दिया जाता है, जहां उन्हें अपमानजनक परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है।

मामला केवल झूठे फिल्मी सपनों तक सीमित नहीं है। हाल के वर्षों में एक और चिंताजनक प्रवृत्ति सामने आई है। बिहार के कई युवक असम आकर स्थानीय लड़कियों से विवाह करते हैं और बाद में उन्हें इसी अवैध कारोबार में झोंक देते हैं। सामाजिक संगठनों का कहना है कि यह मानव तस्करी का नया और अधिक खतरनाक रूप है, जिसमें भावनात्मक विश्वास का भी दुरुपयोग किया जा रहा है।

बचाव अभियानों में सक्रिय मिशन मुक्ति फाउंडेशन के निदेशक वीरेंद्र सिंह के अनुसार लड़कियों से कहा जाता है कि उनके नृत्य के वीडियो रिकॉर्ड किए जाएंगे और उन्हें सामाजिक माध्यमों पर लोकप्रिय बनाया जाएगा। इसके बाद भोजपुरी फिल्मों से बुलावा आने का दावा किया जाता है। लेकिन वास्तविकता में ऐसा कभी नहीं होता और लड़कियां तस्करों के जाल में फंस जाती हैं।

बचाई गई एक युवती ने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा कि उसे बताया गया था कि वह एक दिन बड़ी कलाकार बनेगी। उसे विश्वास दिलाया गया कि उसका नृत्य वीडियो लाखों लोग देखेंगे। लेकिन बिहार पहुंचने के बाद उसे एहसास हुआ कि वह एक सुनियोजित तस्करी गिरोह के कब्जे में है और अजनबियों के सामने नाचने के लिए मजबूर की जा रही है।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्यरत सामाजिक संगठनों का कहना है कि यह समस्या केवल गरीबी की नहीं है, बल्कि जागरूकता और सुरक्षा तंत्र की कमी की भी है। तस्कर जरूरतमंद परिवारों को बिना किसी लिखित समझौते के ऋण देकर उनका विश्वास जीतते हैं और फिर बेटियों को अपने जाल में फंसा लेते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि आर्थिक विकास के आंकड़े तभी सार्थक होंगे जब समाज के कमजोर वर्गों को सुरक्षा और सम्मानजनक अवसर उपलब्ध कराए जाएं। यदि युवतियों को शिक्षा, रोजगार और कौशल विकास के पर्याप्त अवसर नहीं मिले, तो चमक-दमक भरी दुनिया के झूठे सपने उन्हें लगातार ऐसे गिरोहों का शिकार बनाते रहेंगे।

असम विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है, लेकिन क्या उसकी बेटियां सुरक्षित हैं? क्या आर्थिक प्रगति का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है? 40 से अधिक बेटियों का तस्करों के चंगुल से मुक्त होना केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि व्यवस्था और समाज दोनों के लिए गंभीर चेतावनी है। आवश्यकता है कि सरकार, पुलिस, सामाजिक संगठन और अभिभावक मिलकर इस मानव तस्करी के नेटवर्क को जड़ से समाप्त करने के लिए ठोस कदम उठाएं।

फिल्मी दुनिया के सुनहरे सपनों के पीछे छिपे इस काले कारोबार को रोकना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। असम की बेटियां किसी तस्कर गिरोह की शिकार नहीं, बल्कि राज्य के भविष्य की शक्ति हैं। उनकी सुरक्षा, शिक्षा और सम्मान सुनिश्चित करना पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

संपादकीय

मोदी के बारह वर्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूरे होना भारतीय राजनीति और शासन व्यवस्था के एक महत्वपूर्ण अध्याय का संकेत है। इस अवधि में देश ने कई ऐसे निर्णय और परिवर्तन देखे, जिन्हें कभी असंभव माना जाता था। अनुच्छेद 370 की समाप्ति, अयोध्या में राम मंदिर निर्माण, डिजिटल भुगतान क्रांति, जीएसटी, आधारभूत संरचना का विस्तार, आत्मनिर्भर भारत और वैश्विक मंचों पर भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा निस्संदेह इस दौर की बड़ी उपलब्धियां हैं।

आज भारत दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। यूपीआई ने भुगतान व्यवस्था को बदल दिया है, जबकि सड़कों, रेलवे और हवाई अड्डों के विस्तार ने विकास को नई गति दी है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारत की आवाज पहले से कहीं अधिक प्रभावशाली हुई है।

लेकिन लोकतंत्र में उपलब्धियों का मूल्यांकन केवल उपलब्धियों से नहीं, बल्कि शेष चुनौतियों से भी होता है। बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता, कृषि क्षेत्र की समस्याएं, पेपर लीक, बढ़ता साइबर अपराध और आय असमानता जैसे मुद्दे आज भी समाधान की प्रतीक्षा कर रहे हैं। युवाओं की अपेक्षाएं बढ़ी हैं और उन्हें अवसरों की आवश्यकता है।

मोदी सरकार के 12 वर्ष यह साबित करते हैं कि बड़े फैसले लिए जा सकते हैं। अब अगली चुनौती उन फैसलों का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की है। विकास की यात्रा जारी है, लेकिन उसकी वास्तविक सफलता तभी होगी जब आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक और मानवीय विकास भी समान गति से आगे बढ़े।

सुलगता सवाल ? आपके विचार

संगठन का संकट

पश्चिम बंगाल की राजनीति में तृणमूल कांग्रेस जिस संकट से गुजर रही है, वह केवल चुनावी हार का परिणाम नहीं है। यह उस राजनीतिक संस्कृति का भी परिणाम है, जिसमें संगठन से अधिक महत्व व्यक्तित्व को दिया जाता है। ममता बनर्जी ने संघर्ष के बल पर तृणमूल कांग्रेस को खड़ा किया, वामपंथी शासन का अंत किया और एक दशक से अधिक समय तक बंगाल की राजनीति पर प्रभाव बनाए रखा। लेकिन हर राजनीतिक दल की असली परीक्षा सत्ता में नहीं, बल्कि सत्ता खोने के बाद होती है।

यदि किसी पार्टी में विधायक, सांसद और वरिष्ठ नेता लगातार असंतोष जता रहे हैं, तो यह केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का प्रश्न नहीं रह जाता। यह संगठनात्मक कमजोरी और नेतृत्व के प्रति घटते विश्वास का संकेत भी होता है। राजनीतिक दल तब मजबूत बनते हैं जब उनमें संवाद, वैचारिक स्पष्टता और सामूहिक नेतृत्व की संस्कृति मौजूद हो। तृणमूल कांग्रेस के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती विपक्ष से नहीं, बल्कि अपने ही घर के भीतर उठ रहे सवालों से है। बंगाल की जनता भी अब जवाब चाहती है कि पार्टी का भविष्य क्या होगा और उसका नेतृत्व किस दिशा में जाएगा।

यदि संगठन को पुनर्गठित करने, कार्यकर्ताओं का विश्वास जीतने और नई राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालने में देरी हुई, तो तृणमूल कांग्रेस का संकट और गहरा सकता है। सत्ता का अहंकार अक्सर वही फसल काटता है, जो उसने स्वयं बोई होती है।

मर्यादाओं पर संकट

जन जन विचार
...✍ ललित गर्ग

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यह केवल मतदान की व्यवस्था नहीं, बल्कि संवाद, सहमति, असहमति, संवैधानिक मर्यादाओं और सामाजिक उत्तरदायित्वों का एक सशक्त तंत्र है। लोकतंत्र की शक्ति विरोध में निहित है, लेकिन उसकी गरिमा विरोध की शैली, उद्देश्य और मर्यादा से निर्धारित होती है। हाल के दिनों में चर्चित हुई तथाकथित 'कॉकरोच जनता पार्टी' (सीजेपी) इसी संदर्भ में गंभीर विमर्श की मांग करती है। यह आंदोलन प्रतियोगी परीक्षाओं, विशेषकर नीट परीक्षा में कथित अनियमितताओं और पेपर लीक के विरोध के नाम पर उभरा। प्रारंभ में यह सोशल मीडिया पर व्यंग्यात्मक अभियान के रूप में सामने आया और बाद में दिल्ली के जंतर-मंतर तक पहुंच गया। इसके समर्थकों ने इसे युवाओं के आक्रोश की अभिव्यक्ति बताया, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या यह वास्तव में शिक्षा सुधार का आंदोलन है या लोकतांत्रिक असंतोष को व्यंग्य, उपहास और राजनीतिक ध्रुवीकरण की दिशा में मोड़ने वाला एक नया प्रयोग?

भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण विरोध का अधिकार देता है। किंतु कोई भी अधिकार निरंकुश नहीं होता। लोकतंत्र में विरोध का उद्देश्य समाधान की खोज होना चाहिए, न कि अराजकता का विस्तार। यदि विरोध का स्वर केवल उपहास, आक्रोश और टकराव तक सीमित रह जाए, तो वह लोकतंत्र को मजबूत करने के बजाय कमजोर करने लगता है। 'कॉकरोच जनता पार्टी' का नाम ही एक नकारात्मक और व्यंग्यात्मक मानसिकता का परिचायक है। किसी राजनीतिक दल की नकल करते हुए स्वयं को 'कॉकरोच' के प्रतीक से जोड़ना लोकतांत्रिक विमर्श को गंभीरता से अधिक तमाशे में बदलने का प्रयास प्रतीत होता है। लोकतंत्र में व्यंग्य का स्थान है, लेकिन व्यंग्य यदि विचार का स्थान ले ले, तो वह जनमत को भ्रमित भी कर सकता है।

किसी भी आंदोलन का मूल्यांकन उसकी मांगों और कार्यप्रणाली से किया जाता है। सीजेपी की प्रमुख मांगें हैं- परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता, पेपर लीक की रोकथाम, शिक्षा मंत्री का इस्तीफा तथा युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना। इनमें से अधिकांश मांगें ऐसी हैं जिन पर देश का हर जिम्मेदार नागरिक सहमत हो सकता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या इन मांगों को मनवाने का तरीका भी उतना ही जिम्मेदार है? क्या कॉकरोच के मुखौटे पहनना, राजनीतिक व्यंग्य को आंदोलन का आधार बनाना और सोशल मीडिया पर उत्तेजक अभियानों को बढ़ावा देना शिक्षा सुधार का व्यावहारिक मार्ग है? क्या इससे सरकार, विशेषज्ञों और समाज के बीच सार्थक संवाद स्थापित होगा? इतिहास बताता है कि स्थायी परिवर्तन नारेबाजी से नहीं, बल्कि वैचारिक स्पष्टता, संगठनात्मक अनुशासन और रचनात्मक दबाव से आते हैं।

भारत की युवा आबादी उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। लेकिन यही शक्ति यदि निराशा, बेरोजगारी और असंतोष से घिर जाए तो विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के लिए उपयोग का साधन भी बन सकती है। आज देश का युवा प्रतियोगी परीक्षाओं, रोजगार और भविष्य को लेकर चिंतित है। यह चिंता वास्तविक है। लेकिन हर वास्तविक चिंता के साथ एक खतरा भी जुड़ा होता है-उसका राजनीतिक दोहन। जब किसी आंदोलन के पीछे विभिन्न राजनीतिक समूहों, सत्ता-विरोधी संगठनों और वैचारिक एजेंडों की उपस्थिति दिखाई देने लगे, तब यह आशंका स्वाभाविक हो जाती है कि कहीं युवाओं की पीड़ा को राजनीतिक हथियार तो नहीं बनाया जा रहा। यदि छात्र आंदोलन शिक्षा सुधार की जगह सरकार-विरोधी अभियान में बदल जाए, तो सबसे बड़ा नुकसान स्वयं छात्रों का होता है। युवाओं को यह समझना होगा कि वे किसी राजनीतिक प्रयोगशाला के उपकरण नहीं हैं। उनकी ऊर्जा राष्ट्र निर्माण के लिए है, किसी छिपे हुए राजनीतिक एजेंडे के लिए नहीं।

सीजेपी के समर्थकों द्वारा कभी-कभी नेपाल, बांग्लादेश अथवा अन्य देशों में हुए युवा आंदोलनों का उल्लेख किया जाता है। ऐसी तुलना न केवल जल्दबाजी है बल्कि भ्रामक भी हो सकती है। भारत की लोकतांत्रिक संरचना, संस्थागत शक्ति, न्यायिक व्यवस्था, मीडिया की स्वतंत्रता और संवैधानिक ढांचा पड़ोसी देशों से भिन्न है। जिन परिस्थितियों में अन्य देशों में जनआंदोलन उभरे, वे परिस्थितियां भारत में मौजूद नहीं हैं। भारत में चुनावी परिवर्तन की सशक्त व्यवस्था है। यहां सरकारें जनमत से बनती और बदलती हैं। इसलिए भारत के युवाओं को विदेशी या पड़ोसी देशों के आंदोलनों की भावनात्मक तुलना के बजाय भारतीय लोकतंत्र की विशेषताओं को समझना चाहिए। हर देश की राजनीतिक परिस्थितियां अलग होती हैं। इसलिए विदेशी उदाहरणों के आधार पर भारत में असंतोष को भड़काना न तो बौद्धिक रूप से उचित है और न ही राष्ट्रीय हित में।

आज सोशल मीडिया किसी भी विचार को कुछ ही घंटों में लाखों लोगों तक पहुंचा सकता है। लेकिन यही उसकी सबसे बड़ी चुनौती भी है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लोकप्रियता और वैधता एक जैसी चीजें नहीं हैं। कई बार कोई विचार ट्रेंड तो बन जाता है, लेकिन उसके पास न स्पष्ट दृष्टि होती है, न कोई रचनात्मक कार्यक्रम और न कोई उत्तरदायित्व। सोशल मीडिया पर वायरल होना लोकतांत्रिक स्वीकृति का प्रमाण नहीं है। 'कॉकरोच जनता पार्टी' का तेजी से लोकप्रिय होना इस बात का संकेत अवश्य है कि युवाओं में असंतोष है, लेकिन यह इस बात का प्रमाण नहीं कि आंदोलन का मार्ग सही है। लोकतंत्र में ट्रेंडिंग हैशटैग से अधिक महत्व तथ्यों, नीति और संस्थागत संवाद का होता है। यदि राजनीति केवल मीम, व्यंग्य और डिजिटल आक्रोश तक सीमित हो जाए तो लोकतंत्र धीरे-धीरे विचारशील नागरिकता से हटकर भीड़तंत्र में बदल सकता है।

भारत ने वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लिया है। यह लक्ष्य केवल आर्थिक विकास का नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिरता, संस्थागत विश्वास और राष्ट्रीय एकता का भी है। यदि युवा शक्ति का बड़ा हिस्सा निरंतर अविश्वास, नकारात्मकता और टकराव की राजनीति की ओर आकर्षित होता है, तो यह लक्ष्य प्रभावित हो सकता है। विकास के लिए केवल आलोचना नहीं, बल्कि सहभागिता भी आवश्यक है। युवाओं को सरकार से प्रश्न पूछने चाहिए, लेकिन साथ ही समाधान भी प्रस्तुत करने चाहिए। उन्हें जवाबदेही मांगनी चाहिए, लेकिन संस्थाओं के प्रति सम्मान भी बनाए रखना चाहिए। लोकतंत्र की सफलता विरोध और सहयोग के संतुलन में निहित है। इस पूरे प्रकरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष उन राजनीतिक दलों और नेताओं की भूमिका है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ऐसे आंदोलनों को समर्थन देते दिखाई देते हैं।

यदि कोई राजनीतिक दल वास्तव में शिक्षा सुधार चाहता है तो उसे संसद, विधानसभाओं और नीति मंचों पर ठोस प्रस्ताव रखने चाहिए। लेकिन यदि छात्र असंतोष को केवल सरकार को घेरने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, तो यह लोकतंत्र और युवाओं दोनों के साथ अन्याय है। राजनीतिक दलों को स्पष्ट करना चाहिए कि वे शिक्षा सुधार के लिए क्या ठोस कार्यक्रम रखते हैं। केवल विरोध का समर्थन करना पर्याप्त नहीं है। लोकतंत्र में जिम्मेदार विपक्ष का दायित्व विकल्प प्रस्तुत करना भी होता है। परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता, पेपर लीक पर कठोर दंड, रोजगार सृजन, शिक्षा की गुणवत्ता और युवाओं के लिए अवसरों का विस्तार-ये सभी वास्तविक और महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। लेकिन इनका समाधान व्यंग्यात्मक राजनीति या प्रतीकात्मक आक्रोश में नहीं है।

टीएमसी में बगावत, कांग्रेस से नजदीकी पर अटकलें तेज

जन जन विचार
...✍ कोलकाता/नई दिल्ली

पश्चिम बंगाल की राजनीति में इन दिनों तेज हलचल देखने को मिल रही है। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के भीतर बढ़ते असंतोष, नेताओं के इस्तीफों और कांग्रेस नेतृत्व के साथ बढ़ती राजनीतिक बातचीत ने राज्य की राजनीति को नए मोड़ पर ला खड़ा किया है। राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा भी तेज हो गई है कि क्या विपक्षी एकता की राजनीति के तहत कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस के बीच नए समीकरण बन रहे हैं।

हाल के दिनों में दिल्ली में टीएमसी महासचिव अभिषेक बनर्जी की कांग्रेस नेता राहुल गांधी से मुलाकात और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की कांग्रेस संसदीय नेतृत्व के साथ बातचीत ने अटकलों को और हवा दी है। हालांकि तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस दोनों ने किसी संभावित विलय या औपचारिक गठबंधन की खबरों से इनकार किया है।

इधर, टीएमसी के कई नेताओं के इस्तीफों ने पार्टी नेतृत्व की चिंताएं बढ़ा दी हैं। राज्यसभा सांसदों के इस्तीफे और संगठन के भीतर असंतोष की खबरों ने विपक्ष को सरकार पर हमलावर होने का मौका दिया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि 2026 के विधानसभा चुनावों के बाद बदले राजनीतिक परिदृश्य में तृणमूल कांग्रेस अपनी राजनीतिक जमीन को मजबूत

बनाए रखने की चुनौती का सामना कर रही है।

दूसरी ओर कांग्रेस इस स्थिति को बंगाल में अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन वापस पाने के अवसर के रूप में देख रही है। कांग्रेस के भीतर भी इस मुद्दे पर अलग-अलग राय सामने आ रही हैं। जहां कुछ नेता तृणमूल से दूरी बनाए रखने के पक्ष में हैं, वहीं कुछ विपक्षी एकता को प्राथमिकता देने की बात कर रहे हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि बंगाल की राजनीति अब एक निर्णायक दौर में प्रवेश कर चुकी है। यदि टीएमसी के भीतर असंतोष बढ़ता है तो राज्य की राजनीतिक तस्वीर में बड़े बदलाव देखने को मिल सकते हैं। वहीं ममता बनर्जी के सामने पार्टी की एकजुटता बनाए रखने और विपक्षी राजनीति में अपनी केंद्रीय भूमिका को बरकरार रखने की बड़ी चुनौती है।

आने वाले महीनों में नगर निकाय चुनाव, उपचुनाव और विपक्षी दलों के बीच होने वाली राजनीतिक गतिविधियां यह तय करेंगी कि बंगाल की राजनीति किस दिशा में आगे बढ़ती है। फिलहाल इतना स्पष्ट है कि पश्चिम बंगाल में शुरू हुई राजनीतिक हलचल का असर राष्ट्रीय राजनीति पर भी दिखाई दे सकता है।

मेघालय सीमा पर बीएसएफ-बीजीबी आमने-सामने

जन जन विचार
...✍ शिलांग

भारत-बांग्लादेश सीमा पर मेघालय के दक्षिण-पश्चिम गारो हिल्स जिले में एक बांग्लादेशी नागरिक को लेकर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (बीजीबी) के बीच तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गई। दोनों देशों के जवानों के बीच हुई तीखी बहस के चलते 55 वर्षीय एक व्यक्ति कई घंटों तक नो-मैन्स लैंड में फंसा रहा।

घटना महेंद्रगंज के निकट नंदीरचर सीमा क्षेत्र की है। जानकारी के अनुसार, कथित रूप से अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने वाले एक व्यक्ति को बीएसएफ ने

हिरासत में लेने के बाद मानक प्रक्रिया के तहत बांग्लादेश वापस भेजने का प्रयास किया। लेकिन बीजीबी ने उसे स्वीकार करने से इनकार करते हुए दावा किया कि वह भारतीय नागरिक है।

इस विवाद के कारण व्यक्ति सीमा के दोनों ओर से अस्वीकार किए जाने की स्थिति में नो-मैन्स लैंड में फंसा रहा। बाद में उसकी पहचान बांग्लादेश के राजशाही जिले के चालना गांव निवासी सती राजबंशी के रूप में स्थापित हुई। पहचान सत्यापित होने के बाद बांग्लादेशी अधिकारियों ने उसे वापस स्वीकार कर लिया।

गृहिणी भी राष्ट्र निर्माता मिले मुआवजा : सुप्रीम कोर्ट

जन जन विचार
...✍ शिलांग

देश की करोड़ों गृहिणियों के योगदान को ऐतिहासिक मान्यता देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि घर संभालने वाली महिलाएं भी राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनके श्रम को कमतर नहीं आंका जा सकता। सर्वोच्च न्यायालय ने सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाने वाली गृहिणियों के मुआवजे के निर्धारण को लेकर एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए उनके घरेलू कार्य और परिवार की देखभाल के आर्थिक मूल्य को कम से कम 30 हजार रुपए प्रतिमाह मानने का निर्देश दिया है।

न्यायमूर्ति संजय करोल और न्यायमूर्ति एन. कोटिस्वर सिंह की पीठ ने कहा कि गृहिणियों के योगदान की तुलना केवल किसी कुशल या अकुशल मजदूर के वेतन से नहीं की जा सकती। परिवार के संचालन, बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की सेवा और घर की संपूर्ण व्यवस्था में उनकी भूमिका अमूल्य है। इसलिए मुआवजा तय करते समय उनके कार्यों के वास्तविक सामाजिक और आर्थिक महत्व को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

आर्य नगर कांड की आंच में झुलस रहा...

घटना के बाद सोशल मीडिया और विभिन्न संगठनों की ओर से यह आरोप लगाया गया कि विवाद के दौरान 'असमिया गो बैक' जैसे नारे लगाए गए। इस दावे ने मामले को संवेदनशील बना दिया और कई संगठनों ने इसे राज्य की अस्मिता से जुड़ा मुद्दा बताते हुए कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। छात्र संगठनों और सामाजिक संस्थाओं ने दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

सोशल मीडिया और गैर-जिम्मेदाराना...

गई। ऊपर से इस घटना में आग में घी डालने का काम कुछ गैर-जिम्मेदाराना रिपोर्टिंग ने किया। कुछ मीडिया घरानों ने बिना तथ्यों की जांच किए आनन-फानन में इसे असमिया अस्मिता से जोड़ने का काम किया। हालांकि पुलिस ने अब तक ऐसे किसी नारेबाजी के प्रमाण मिलने से इनकार किया है। यह घटना एक बार फिर यह सवाल खड़ा करती है कि संवेदनशील सामाजिक मुद्दों पर सोशल मीडिया की भूमिका कितनी जिम्मेदार होनी चाहिए। बिना सत्यापन के प्रसारित सूचनाएं कई बार जनभावनाओं को भड़का सकती हैं और कानून-व्यवस्था के लिए चुनौती बन सकती हैं।

असम जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राज्य में सामाजिक सौहार्द्र बनाए रखना सभी पक्षों की जिम्मेदारी है। यदि किसी अपराध या अवैध गतिविधि को जातीय पहचान से जोड़ दिया जाए, तो इससे वास्तविक समस्या पीछे छूट जाती है और समाज में अनावश्यक तनाव पैदा होता है।

पुलिस ने नागरिकों से अफवाहों पर विश्वास न करने तथा किसी भी प्रकार के प्रमाण होने पर जांच एजेंसियों को उपलब्ध कराने की अपील की है। फिलहाल पूरे मामले की जांच जारी है और पुलिस का कहना है कि दोषियों के खिलाफ जल्द कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

आर्य नगर की घटना यह संदेश देती है कि अपराध को अपराध की दृष्टि से देखना चाहिए, न कि उसे जातीय या भाषाई चश्मे से। समाज और प्रशासन दोनों की जिम्मेदारी है कि तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाएं, ताकि शांति, विश्वास और सामाजिक एकता बनी रहे।

विवाद पर आसू का आक्रोश

चेतावनी दी है। संगठन ने कामरूप (मेट्रो) जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर दोषियों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई की मांग की है।

आसू अध्यक्ष उत्पल शर्मा ने इस मुद्दे पर सेंट्रल गुवाहाटी के विधायक विजय गुप्ता की भूमिका पर सवाल उठाते हुए कहा कि जनता के बीच स्वयं को असमिया हितों का समर्थक बताने वाले जनप्रतिनिधियों को ऐसे समय में खुलकर अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि असमिया समाज के खिलाफ होने वाली घटनाओं पर अपेक्षित संवेदनशीलता नहीं दिखाई जा रही है।

आसू ने यह भी दावा किया कि पिछले कुछ महीनों में असमिया समुदाय से जुड़े कई विवाद सामने आए हैं, जिससे समाज में असुरक्षा और असंतोष की भावना बढ़ रही है। हालांकि संगठन ने स्पष्ट किया कि असम में रोजगार और व्यवसाय के लिए आने वाले गैर-असमिया लोगों से किसी प्रकार का विरोध नहीं है, लेकिन समुदाय के सम्मान और पहचान पर किसी भी प्रकार के हमले को स्वीकार नहीं किया जाएगा। इस बीच, असम साहित्य सभा के अध्यक्ष बसंत कुमार गोस्वामी ने भी घटना की निंदा करते हुए विशेष रूप से उस पत्रकार पर हुए कथित हमले पर चिंता व्यक्त की, जो घटनास्थल पर समाचार संकलन के लिए गया था। उन्होंने कहा कि पत्रकारों की सुरक्षा लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इस प्रकार की घटनाएं चिंताजनक हैं।

वीरता, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति की अमर प्रतीक रानी लक्ष्मीबाई

17 जून : लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई का नाम अदम्य साहस, वीरता और मातृभूमि के प्रति समर्पण के प्रतीक के रूप में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। 17 जून 1858 को ग्वालियर के निकट कोटा-की-सराय में अंग्रेजों से युद्ध करते हुए उन्होंने वीरगति प्राप्त की थी। इसी दिन को उनके बलिदान दिवस के रूप में स्मरण किया जाता है।

19 नवंबर 1828 को वाराणसी में जन्मी मणिकर्णिका तांबे आगे चलकर झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के नाम से प्रसिद्ध हुईं। विवाह के बाद वे झांसी की महारानी बनीं। अंग्रेजों की 'हड़प नीति' के तहत झांसी को अपने अधीन करने के प्रयास का उन्होंने दृढ़ता से विरोध किया। उनका प्रसिद्ध संकल्प, 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी', आज भी देशवासियों में देशभक्ति का संचार करता है।

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ मोर्चा संभाला। उन्होंने असाधारण नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए पुरुष योद्धाओं के समान युद्धभूमि में तलवार उठाई। घोड़े पर सवार होकर शत्रुओं का सामना करने वाली यह वीरांगना भारतीय महिलाओं के साहस और आत्मसम्मान की मिसाल बन गई।

17 जून 1858 को युद्ध के दौरान घायल होने के बावजूद उन्होंने अंतिम सांस तक संघर्ष किया और मातृभूमि की रक्षा करते हुए बलिदान दे दिया। उनका बलिदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।

आज भी रानी लक्ष्मीबाई का जीवन हमें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष, आत्मसम्मान की रक्षा और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने की प्रेरणा देता है। उनके बलिदान दिवस पर राष्ट्र कृतज्ञ भाव से इस महान वीरांगना को नमन करता है।

'खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी', यह पंक्ति आज भी उनके अद्वितीय शौर्य की गाथा सुनाती है।

दीपिका चौधरी बनीं कामरूप (मेट्रो) की विद्यालय निरीक्षक

जन जन विचार ...✍ गुवाहाटी

असम सरकार ने शिक्षा प्रशासन में महत्वपूर्ण नियुक्ति करते हुए असम शिक्षा सेवा (एईएस) की अधिकारी दीपिका चौधरी को कामरूप (मेट्रोपॉलिटन) जिले का नया विद्यालय निरीक्षक नियुक्त किया है। इस संबंध में गत 8 जून को आधिकारिक आदेश जारी किया गया।

वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा निदेशक कार्यालय में उपनिदेशक के पद पर कार्यरत दीपिका चौधरी को नई जिम्मेदारी के साथ अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा गया है।

आदेश के अनुसार वे कामरूप (मेट्रो) जिले की जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी (डीईओ) का दायित्व भी संभालेंगी। इसके साथ ही वे उपनिदेशक के अपने वर्तमान पद पर भी कार्यरत रहेंगी।

उल्लेखनीय है कि कामरूप (मेट्रो) में विद्यालय निरीक्षक का पद इस वर्ष विधानसभा चुनाव से पहले से ही रिक्त पड़ा था। लंबे समय से खाली इस पद पर नियुक्ति होने से जिले के शिक्षा प्रशासन को नई गति मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

सरकारी आदेश में कहा गया है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए यह नियुक्ति तत्काल प्रभाव से लागू होगी। शिक्षा विभाग के अधिकारियों का मानना है कि दीपिका चौधरी के अनुभव का लाभ जिले की विद्यालयी एवं प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को मिलेगा।

गौरतलब है कि विधानसभा चुनाव से पूर्व भी दीपिका चौधरी कामरूप मेट्रो जिले की विद्यालय निरीक्षक व डीईओ पद पर कार्यरत थीं।

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026 के लिए आवेदन शुरू, 5 जुलाई तक करें पंजीकरण

जन जन विचार ...✍ नई दिल्ली

शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2026 हेतु आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा दिए जाने वाले इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए इच्छुक शिक्षक 5 जुलाई 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

वर्ष 1958 में शुरू किए गए इस पुरस्कार का वितरण प्रतिवर्ष 5 सितंबर, शिक्षक दिवस के अवसर पर किया जाता है। इस वर्ष पुरस्कार दो श्रेणियों में प्रदान किए जाएंगे। उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के लिए 25 तथा पॉलिटेक्निक संस्थानों के शिक्षकों के लिए 10 पुरस्कार निर्धारित किए गए हैं।

आवेदन के लिए उम्मीदवार का नियमित संकाय सदस्य होना तथा स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर पर कम से कम पांच वर्ष का पूर्णकालिक शिक्षण अनुभव होना आवश्यक है। अधिकतम आयु सीमा 55 वर्ष निर्धारित की गई है।

चयनित शिक्षकों को पदक, प्रशस्ति पत्र और 50 हजार रुपए की नकद राशि प्रदान की जाएगी। आवेदन स्वयं, संस्थान अथवा सहकर्मियों की अनुशंसा के माध्यम से किया जा सकता है। इच्छुक शिक्षक आधिकारिक वेबसाइट awards.gov.in पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

इग्नू में पीएचडी प्रवेश प्रक्रिया शुरू

नई दिल्ली। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने जुलाई 2026 सत्र के लिए पीएचडी प्रवेश प्रक्रिया शुरू कर दी है। इच्छुक एवं पात्र अभ्यर्थी 1 जुलाई 2026 तक विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट ignou.ac.in पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय द्वारा मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, रसायन विज्ञान, शिक्षा, हिंदी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, इतिहास, लोक प्रशासन, प्रबंधन सहित कुल 36 विषयों में शोध कार्यक्रमों में प्रवेश दिया जाएगा। आवेदन प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन होगी।

इग्नू प्रशासन के अनुसार, आवेदन पोर्टल पर पंजीकरण के बाद निर्धारित समय सीमा के भीतर आवेदन पत्र जमा करना अनिवार्य है। विश्वविद्यालय ने अभ्यर्थियों को अंतिम तिथि का इंतजार न करने की सलाह दी है।

आरआरबी एएलपी भर्ती अंतिम तिथि 14 जून

नई दिल्ली। रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी) द्वारा असिस्टेंट लोको पायलट (एएलपी) के पदों पर भर्ती के लिए आवेदन प्रक्रिया जारी है। इच्छुक अभ्यर्थी 14 जून तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

इस भर्ती के लिए अभ्यर्थी का 10वीं के साथ आईटीआई उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इंजीनियरिंग डिप्लोमा अथवा डिग्री धारक उम्मीदवार भी आवेदन के पात्र हैं। आवेदक की आयु 18 से 30 वर्ष के बीच होनी चाहिए। आरक्षित वर्ग के उम्मीदवारों को नियमानुसार आयु सीमा में छूट मिलेगी।

आवेदन केवल आरआरबी की आधिकारिक वेबसाइट rrbapply.gov.in के माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे। सामान्य, ओबीसी और ईडब्ल्यूएस वर्ग के लिए आवेदन शुल्क 500 रुपए तथा एससी, एसटी और दिव्यांग वर्ग के लिए 250 रुपए निर्धारित किया गया है।

'साल में दो या तीन बार हो नीट परीक्षा'

नई दिल्ली। नीट-यूजी 2026 में पेपर लीक विवाद के बीच संसदीय स्थायी समिति ने महत्वपूर्ण सुझाव देते हुए कहा है कि मेडिकल प्रवेश परीक्षा साल में दो या तीन बार आयोजित की जानी चाहिए। समिति का मानना है कि इससे छात्रों पर मानसिक दबाव कम होगा और उन्हें सफलता के अधिक अवसर मिलेंगे। वर्तमान में नीट वर्ष में केवल एक बार आयोजित होती है। समिति ने परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता और जवाबदेही पर भी सवाल उठाए हैं। अब इस प्रस्ताव पर अंतिम निर्णय केंद्र सरकार को लेना है।

वैभव ने फिर मचाया तूफान, लेकिन अधूरी रह गई कहानी

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

भारतीय क्रिकेट को पिछले कुछ वर्षों में कई प्रतिभाशाली युवा खिलाड़ी मिले हैं, लेकिन जिन नामों ने कम उम्र में सबसे अधिक चर्चा बटोरी है, उनमें वैभव सूर्यवंशी प्रमुख हैं। एक बार फिर इस युवा बल्लेबाज ने अपने आक्रामक खेल से क्रिकेट प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

अफगानिस्तान-ए के खिलाफ त्रिकोणीय श्रृंखला के मुकाबले में वैभव ने केवल 22 गेंदों में 44 रन बनाकर यह साबित कर दिया कि उनमें किसी भी गेंदबाजी आक्रमण को ध्वस्त करने की क्षमता है। नौ शानदार चौकों से सजी उनकी पारी ने एकदिवसीय मुकाबले को कुछ समय के लिए बीस ओवरों के खेल का रोमांच दे दिया। क्रीज पर आते ही उन्होंने जिस आत्मविश्वास और आक्रामकता का प्रदर्शन किया, उससे विरोधी टीम पूरी तरह दबाव में आ गई।

विशेष बात यह रही कि वैभव ने पहली ही गेंदों से आक्रमण का रास्ता चुना। उनके शॉट चयन और टाइमिंग ने दर्शकों को प्रभावित किया। ऐसा लग रहा था कि वह बड़ी पारी खेलने की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन क्रिकेट केवल प्रतिभा का नहीं, धैर्य और संयम का भी खेल है। जब बल्लेबाज पूरी तरह जम चुका था, तभी एक जोखिम भरा शॉट उसके लिए भारी पड़ गया।

44 रन पर आउट होने के बाद वैभव के चेहरे पर निराशा साफ दिखाई दी। यह निराशा केवल विकेट गंवाने की नहीं थी, बल्कि एक संभावित अर्धशतक या उससे भी बड़ी पारी हाथ से निकल जाने की थी।

फिर भी इस पारी ने एक महत्वपूर्ण संदेश दिया है। वैभव सूर्यवंशी केवल भविष्य के खिलाड़ी नहीं, बल्कि वर्तमान में भी प्रभाव छोड़ने की क्षमता रखते हैं। जरूरत केवल अपनी आक्रामकता और धैर्य के बीच संतुलन बनाने की है। यदि वह यह कला सीख जाते हैं, तो भारतीय क्रिकेट को आने वाले वर्षों में एक ऐसा बल्लेबाज मिल सकता है जो मैच का रुख कुछ ही मिनटों में बदलने की क्षमता रखता हो।

यह पारी भले अधूरी रही हो, लेकिन इसमें भविष्य के एक बड़े सितारे की चमक साफ दिखाई दी।

टी-20 का ताज जीतने का सुनहरा मौका

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

महिला टी-20 विश्व कप का आगाज होते ही करोड़ों भारतीय क्रिकेट प्रेमियों की निगाहें एक बार फिर भारतीय महिला टीम पर टिक गई हैं। वर्षों से शानदार प्रदर्शन के बावजूद टी-20 विश्व कप का खिताब भारत की झोली में नहीं आ सका है। लेकिन इस बार परिस्थितियां कुछ अलग नजर आ रही हैं और हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली टीम पहले से अधिक संतुलित, अनुभवी और आत्मविश्वास से भरी दिखाई दे रही है।

भारतीय टीम की सबसे बड़ी ताकत उसका मजबूत बल्लेबाजी क्रम है। स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा की सलामी जोड़ी किसी भी गेंदबाजी आक्रमण की लय बिगाड़ने का माद्दा रखती है। मध्यक्रम में जेमिमा रोड्रिग्स और कप्तान हरमनप्रीत कौर टीम को स्थिरता और आक्रामकता दोनों प्रदान करती हैं। वहीं ऋचा घोष अंतिम ओवरों में तेज रन बटोरकर मैच का रुख बदलने की क्षमता रखती हैं।

गेंदबाजी विभाग भी इस बार भारतीय टीम की बड़ी ताकत बनकर उभरा है। इंग्लैंड की परिस्थितियों में तेज गेंदबाजों को मदद मिलने की संभावना है और रेणुका सिंह, क्रांति गौड़ तथा युवा नंदिनी शर्मा इस चुनौती के लिए तैयार दिख रही हैं। दूसरी ओर श्री चरणी, राधा यादव और श्रेयंका पाटिल की स्पिन तिकड़ी विपक्षी बल्लेबाजों के लिए कठिन परीक्षा साबित हो सकती है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हाल के वर्षों में भारतीय महिला क्रिकेट ने निरंतर प्रगति की है। बड़े टूर्नामेंटों का अनुभव, खिलाड़ियों का आत्मविश्वास और जीत की बढ़ती मानसिकता टीम को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकती है।

हालांकि खिताब जीतना का रास्ता आसान नहीं होगा। इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड जैसी मजबूत टीमें भी मैदान में हैं। लेकिन यदि भारतीय खिलाड़ी अपनी क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन करने में सफल रहीं, तो यह विश्व कप इतिहास रचने का सुनहरा अवसर बन सकता है।

भारतीय महिला क्रिकेट के लिए यह केवल एक टूर्नामेंट नहीं, बल्कि वर्षों के सपनों को साकार करने का मौका है। देश को उम्मीद है कि इस बार नीली जर्सी में मैदान पर उतरने वाली बेटियां टी-20 विश्व कप का बहुप्रतीक्षित ताज भारत लेकर आएंगी।

नाजिरा के पार्थिव सुंदर गोगोई ने बढ़ाया असम का मान

जन जन विचार
...✍ नाजिरा

असम के नाजिरा क्षेत्र के शिमलुगुड़ी भोगबाड़ी नाहर अली खनिकर गांव के प्रतिभाशाली फुटबॉल खिलाड़ी पार्थिव सुंदर गोगोई का भारतीय सीनियर फुटबॉल टीम में चयन होने से पूरे क्षेत्र में उत्साह और गर्व का माहौल है। राष्ट्रीय टीम में फॉरवर्ड के रूप में जगह बनाने वाले पार्थिव की इस उपलब्धि को असम के खेल जगत के लिए बड़ी सफलता माना जा रहा है।

बचपन से ही फुटबॉल के प्रति समर्पित पार्थिव ने कम उम्र में गड़गांव फुटबॉल कोचिंग सेंटर से प्रशिक्षण लेना शुरू किया था। लगातार मेहनत और शानदार प्रदर्शन के दम पर उन्होंने पहले नॉर्थईस्ट यूनाइटेड फुटबॉल क्लब में अपनी पहचान बनाई। भारतीय सुपर लीग में उनके प्रभावशाली खेल ने राष्ट्रीय चयनकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया और अब उन्हें भारतीय सीनियर टीम में खेलने का अवसर मिला है।

पार्थिव की सफलता से उनके पिता पवन गोगोई और माता शुभा लाहन गोगोई बेहद खुश हैं। उन्होंने कहा कि बेटे की यह उपलब्धि पूरे परिवार के लिए गर्व का क्षण है। साथ ही उन्होंने असमवासियों से पार्थिव के उज्ज्वल भविष्य और राष्ट्रीय टीम में बेहतर प्रदर्शन के लिए आशीर्वाद देने की अपील की।

उल्लेखनीय है कि पार्थिव के बड़े भाई प्रज्ञान सुंदर गोगोई भी फुटबॉल जगत में अपनी पहचान बना चुके हैं। एक ही परिवार के दो खिलाड़ियों की उपलब्धियों ने नाजिरा सहित पूरे असम को गौरवान्वित किया है।

पार्थिव के भारतीय टीम में चयन की खबर मिलते ही गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। स्थानीय लोगों, खेल प्रेमियों और शुभचिंतकों ने इसे क्षेत्र के युवाओं के लिए प्रेरणादायक उपलब्धि बताया है। असम के खेल प्रेमियों को अब उम्मीद है कि पार्थिव राष्ट्रीय टीम में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए देश और राज्य का नाम रोशन करेंगे।

हंसी का महाकुंभ लेकर आ रही है 'वेलकम टू द जंगल'

जन जन विचार
...✍ मुंबई

हिंदी सिनेमा में कुछ ऐसी फिल्में होती हैं जो केवल मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि दर्शकों की यादों का हिस्सा बन जाती हैं। वर्ष 2007 में प्रदर्शित हुई 'वेलकम' ऐसी ही एक फिल्म थी, जिसने हास्य, अभिनय और संवादों के बल पर दर्शकों के दिलों में विशेष स्थान बनाया। अब लगभग दो दशक बाद इसी श्रृंखला की नई कड़ी 'वेलकम टू द जंगल' दर्शकों के सामने आने के लिए तैयार है।

हाल ही में जारी फिल्म की झलक ने यह संकेत दे दिया है कि इस बार दर्शकों को हंसी का और भी बड़ा खजाना मिलने वाला है। सबसे बड़ी बात यह है कि अक्षय कुमार एक बार फिर इस लोकप्रिय श्रृंखला में लौट रहे हैं। उनकी सहज हास्य शैली और चुटीला अभिनय पहले से ही दर्शकों की पसंद रहा है।

फिल्म की कहानी एक ऐसे गांव के इर्द-गिर्द घूमती है, जहां डाकुओं का आतंक है। परिस्थितियां ऐसी बनती हैं कि कुछ लोग सेना के जवान समझ लिए जाते हैं और यहीं से हास्यास्पद घटनाओं की लंबी श्रृंखला शुरू होती है। गलतफहमियां, मजेदार संवाद और अप्रत्याशित घटनाएं दर्शकों को लगातार हंसाने का काम करती हैं।

फिल्म में परेश रावल, राजपाल यादव, जैकी श्रॉफ, रवीना टंडन सहित कई चर्चित कलाकार दिखाई देंगे। इन कलाकारों की मौजूदगी ही इस बात का संकेत है कि फिल्म में हास्य के अनेक रंग देखने को मिलेंगे। विशेष आकर्षण प्रसिद्ध गायक दलेर मेहंदी हैं, जो पहली बार बड़े पर्दे पर अभिनय करते नजर आएंगे। झलक में उनकी उपस्थिति और संवाद अदायगी ने दर्शकों का ध्यान खास तौर पर आकर्षित किया है। कई दर्शकों का मानना है कि दलेर मेहंदी अपनी सहज शैली से बड़े-बड़े कलाकारों पर भी भारी पड़ सकते हैं।

फिल्म के निर्माता इसे भव्य मनोरंजक प्रस्तुति के रूप में दर्शकों के सामने ला रहे हैं। इसमें हास्य के साथ रोमांच, भ्रम, नाटकीय मोड़ और पारिवारिक मनोरंजन का भी समावेश है। यही कारण है कि इसकी चर्चा केवल सिनेमा प्रेमियों तक सीमित नहीं है, बल्कि परिवारों और युवाओं के बीच भी उत्सुकता का विषय बनी हुई है।

आज के दौर में जब गंभीर और हिंसक विषयों वाली फिल्मों की संख्या बढ़ रही है, ऐसे समय में 'वेलकम टू द जंगल' जैसी हल्की-फुल्की हास्य फिल्म दर्शकों को राहत देने का काम कर सकती है। यदि फिल्म अपनी झलक के अनुरूप दर्शकों को हंसाने में सफल रहती है, तो यह वर्ष की सबसे चर्चित मनोरंजक फिल्मों में शामिल हो सकती है।

हंसी, मस्ती और मनोरंजन का यह कारवां अब दर्शकों के स्वागत के लिए तैयार है।

'तार बिजली से पतले हमारे पिया'

बिहार की मिट्टी से निकला गीत, जिसने पूरे देश को झूमने पर कर दिया मजबूर

जन जन विचार
...✍ मुंबई

भारत की लोकसंस्कृति की सबसे बड़ी ताकत उसकी जीवंत परंपराएं हैं। गांवों की चौपालों, खेत-खलिहानों और विवाह समारोहों में जन्मे अनेक लोकगीत समय की सीमाओं को पार कर राष्ट्रीय पहचान बना चुके हैं। ऐसा ही एक गीत है- 'तार बिजली से पतले हमारे पिया', जिसने बिहार के गांवों से निकलकर पूरे देश के दिलों में जगह बनाई।

यह गीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि बिहार की समृद्ध लोकसंस्कृति का जीवंत दस्तावेज है। भोजपुरी, मैथिली और मगही भाषायी क्षेत्रों में यह गीत पीढ़ियों से विवाह समारोहों का अभिन्न हिस्सा रहा है। जब घर में शादी होती है, तब दुल्हन पक्ष की महिलाएं और सखियां दूल्हे की हंसी-मजाक में खिंचाई करते हुए इस गीत को गाती हैं। गीत के बोलों में हास्य, अपनापन और ग्रामीण जीवन की सहजता झलकती है।

लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वे समाज की भावनाओं को सरल भाषा में व्यक्त करते हैं। 'तार बिजली से पतले हमारे पिया' भी इसी परंपरा का प्रतिनिधि गीत है। इसमें किसी प्रकार की कटुता नहीं, बल्कि रिश्तों में मिठास घोलने वाला विनोद है। यही कारण है कि यह गीत दशकों से बिहार के गांवों में लोकप्रिय बना हुआ है।

वर्ष 2012 में इस गीत को नई पहचान तब मिली, जब इसे प्रसिद्ध फिल्म गैंग्स ऑफ वासेपुर पार्ट-2 में शामिल किया गया। लोकगायन की महान हस्ती शारदा सिन्हा की सुमधुर आवाज ने इस गीत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया। फिल्म में गीत का प्रयोग केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य के रूप में भी किया गया, जिसने दर्शकों को गहराई से प्रभावित किया।

फिल्म की लोकप्रियता के साथ यह लोकगीत राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो गया। जिन लोगों ने कभी बिहार की लोकसंस्कृति को करीब से नहीं देखा था, वे भी इस गीत की धुन पर झूमने लगे। यह उस सांस्कृतिक शक्ति का प्रमाण है, जो लोक परंपराओं में निहित होती है।

आज 'तार बिजली से पतले हमारे पिया' केवल एक गीत नहीं, बल्कि बिहार की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुका है। यह साबित करता है कि लोककला की जड़ें जितनी गहरी होती हैं, उसकी पहुंच उतनी ही दूर तक जाती है। गांव की गलियों से निकलकर राष्ट्रीय मंच तक पहुंचने की यह यात्रा भारतीय लोकसंस्कृति की जीवंतता और उसकी अमर शक्ति की कहानी कहती है।

आइजल : जहां सड़कों पर शोर नहीं, संस्कार चलते हैं

तेजी से भागती दुनिया में शांति अब एक दुर्लभ अनुभव बनती जा रही है। महानगरों की भीड़, घंटों का जाम और वाहनों के लगातार बजते हॉर्न लोगों के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। ऐसे समय में पूर्वोत्तर का खूबसूरत शहर आइजल एक अलग मिसाल पेश करता है। मिजोरम की राजधानी आइजल को अक्सर भारत की 'साइलेंट सिटी' कहा जाता है।

यह नाम किसी नियम या सरकारी घोषणा के कारण नहीं, बल्कि यहां के लोगों की जीवनशैली और यातायात अनुशासन के कारण मिला है। आइजल की सड़कों पर वाहन तो चलते हैं, लेकिन शोर नहीं सुनाई देता। यहां बिना वजह हॉर्न बजाना असभ्यता माना जाता है। लोग धैर्य के साथ अपनी बारी का इंतजार करते हैं और एक-दूसरे का सम्मान करते हुए वाहन चलाते हैं।

समुद्र तल से लगभग 1132 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह शहर हरी-भरी पहाड़ियों और सुंदर घाटियों से घिरा हुआ है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता के कारण इसे 'हाइलैंडर्स की धरती' भी कहा जाता है। लेकिन आइजल की असली पहचान उसकी अनुशासित यातायात व्यवस्था है। यहां दोपहिया और चारपहिया वाहनों के लिए अलग-अलग लेन निर्धारित हैं। लोग लेन बदलने या आगे निकलने से पहले संकेत देते हैं और अनावश्यक जल्दबाजी से बचते हैं।

पर्यटन की दृष्टि से भी आइजोल बेहद आकर्षक है। सोलोमन मंदिर, मिजोरम राज्य संग्रहालय, बारा बाजार और निकट स्थित सुंदर गांव पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

জন জন বিচাৰ
সপ্তাহৰ চিন্তা
"সত্যৰ পথ কেতিয়াও সহজ নহয়, কিন্তু যিয়ে সাহসেৰে সত্যক আঁকোৱালি লয়, তেওঁক ইতিহাসে সন্মান দিয়ে।"

ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ
সাপ্তাহিক
জন জন বিচাৰ
Guwahati,12 June, 2026 Friday :: শুক্ৰবাৰ, ১২ জুন, কৃষ্ণা, দ্বাদশী, শকাব্দ ১৯৪৮

উন্নয়ন আৰু ২০২৯ লক্ষ্যত হিমন্তৰ 'টীম ১৭'

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই ৫ জুনত ১২ জন নতুন মন্ত্ৰীক শপত গ্ৰহণ কৰাই নিজৰ দ্বিতীয় কাৰ্যকালৰ মন্ত্ৰীসভাক পূৰ্ণ ৰূপ দিলে। ৰাজ্যপাল লক্ষ্মণ প্ৰসাদ আচাৰ্যই জ্যোতি-বিষ্ণু আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় কলা মন্দিৰত অনুষ্ঠিত এক গাম্ভীৰ্যপূৰ্ণ অনুষ্ঠানত নতুন মন্ত্ৰীসকলক পদ আৰু গোপনীয়তাৰ শপত পাঠ কৰায়।

এই সম্প্ৰসাৰণৰ পিছত অসমৰ মন্ত্ৰীসভাৰ সদস্যসংখ্যা মুখ্যমন্ত্ৰীসহ ১৭ জনলৈ বৃদ্ধি পালে। ইয়াৰ আগতে ১২ মেত অজন্তা নেওগ, অতুল বৰা, চৰণ বড়ো আৰু ৰামেশ্বৰ তেলীয়ে মন্ত্ৰী হিচাপে শপত গ্ৰহণ কৰিছিল।

নতুনকৈ শপত লোৱা মন্ত্ৰীসকলৰ ভিতৰত ডঃ ৰণোজ পেগু, অশোক সিংঘল, বিশ্বজিৎ দৈমাৰী, কেশৱ মহন্ত, বিমল বৰা, পীযুষ হাজৰিকা, জয়ন্ত মল্লবৰুৱা, কৌশিক ৰায়, কৃষ্ণেন্দু পল, অশ্বিনী ৰায় চৰকাৰ, নন্দিনী দেৱী আৰু সুশান্ত বৰগোহাঁই উল্লেখযোগ্য। ইয়াৰে অশ্বিনী ৰায় চৰকাৰ, নন্দিনী দেৱী আৰু সুশান্ত বৰগোহাঁইক নতুন মুখ হিচাপে গণ্য কৰা হৈছে।

ৰাজনৈতিক বিশ্লেষকসকলৰ মতে, এই মন্ত্ৰীসভা কেৱল বিভাগ বণ্টনৰ বিষয় নহয়; ই আঞ্চলিক, জাতিগত আৰু সামাজিক প্ৰতিনিধিত্বৰ এক সুসংগঠিত সমীকৰণ। বৰাক উপত্যকা, ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকা, বড়োলেণ্ড অঞ্চল, চাহ জনগোষ্ঠী, আদিবাসী আৰু বিভিন্ন জনগোষ্ঠীৰ প্ৰতিনিধিত্ব নিশ্চিত কৰাৰ চেষ্টা এই গঠনতে স্পষ্ট।

মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই গৃহ, ৰাজনৈতিক, লোকনিৰ্মাণ আৰু শক্তি আদি গুৰুত্বপূৰ্ণ বিভাগ নিজৰ হাতত ৰাখিছে। আনহাতে বিত্ত বিভাগ অজন্তা নেওগৰ হাতত থাকিব। শিক্ষা বিভাগৰ দায়িত্ব পুনৰ ডঃ ৰণোজ পেগুক দিয়াৰ লগতে স্বাস্থ্য খণ্ড অশোক সিংঘলৰ নেতৃত্বত থাকিব।

২০২৬ চনৰ বিধানসভা নিৰ্বাচনত এনডিএয়ে ১২৬খন আসনৰ ভিতৰত অভিলেখ ১০২খন আসন লাভ কৰাৰ পিছত গঠিত এই চৰকাৰৰ মন্ত্ৰীসভা সম্প্ৰসাৰণক আগন্তুক পাঁচ বছৰৰ শাসন আৰু ২০২৯ চনৰ লোকসভা নিৰ্বাচনৰ বাবে এক সুদূৰপ্ৰসাৰী ৰাজনৈতিক প্ৰস্তুতি হিচাপে দেখা হৈছে।

অসমৰ জনসাধাৰণে এতিয়া আশা কৰিছে যে নতুন মন্ত্ৰীসভাই নিৰ্বাচনী প্ৰতিশ্ৰুতি বাস্তৱায়ন, কৰ্মসংস্থান সৃষ্টি, শিক্ষা-স্বাস্থ্যৰ উন্নয়ন আৰু আন্তঃগাঁথনি নিৰ্মাণৰ ক্ষেত্ৰত দৃশ্যমান ফলাফল আগবঢ়াব।

	কাৰ হাতত কোন বিভাগ
মন্ত্ৰী	বিভাগ
ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মা	গৃহ, ৰাজনৈতিক, লোকনিৰ্মাণ , শক্তি, সাধাৰণ প্ৰশাসন আদি
অজন্তা নেওগ	বিত্ত, মহিলা আৰু শিশু উন্নয়ন
অতুল বৰা	কৃষি, আবকাৰী, সীমান্ত সুৰক্ষা, অসম চুক্তি ৰূপায়ণ
ৰামেশ্বৰ তেলী	পৰিবহণ, শ্ৰম কল্যাণ, চাহ জনগোষ্ঠী আৰু আদিবাসী কল্যাণ
অশোক সিংঘল	স্বাস্থ্য আৰু পৰিয়াল কল্যাণ, চিকিৎসা শিক্ষা আৰু গৱেষণা
ডঃ ৰণোজ পেগু	বিদ্যালয় আৰু উচ্চ শিক্ষা, সমতল জনজাতি পৰিক্ৰমা, তথ্য প্ৰযুক্তি
বিমল বৰা	সাংস্কৃতিক পৰিক্ৰমা, উদ্যোগ, বাণিজ্য, ৰাজহুৱা উদ্যোগ, পূবমুখী কৰ্মনীতি
পীযুষ হাজৰিকা	কৃষি বিপণন, জলসিঞ্চন, সংসদীয় পৰিক্ৰমা
বিশ্বজিৎ দৈমাৰী	বন আৰু পৰিৱেশ, জনজাতি আৰু পিছপৰা শ্ৰণী উন্নয়ন
কেশৱ মহন্ত	জলসম্পদ, বিজ্ঞান আৰু প্ৰযুক্তি
জয়ন্ত মল্লবৰুৱা	জনস্বাস্থ্য কাৰিকৰী , দক্ষতা উন্নয়ন, উদ্যোগিক প্ৰশিক্ষণ
কৌশিক ৰায়	খাদ্য, অসামৰিক যোগান আৰু গ্ৰাহক পৰিক্ৰমা
কৃষ্ণেন্দু পল	পশুপালন আৰু পশুচিকিৎসা, মীন বিভাগ
নন্দিনী দেৱী	সমাজ কল্যাণ, সমাজ ন্যায় আৰু সবলীকৰণ
অশ্বিনী ৰায় চৰকাৰ	বস্ত্ৰ আৰু হস্তত‍াঁত, ৰেচম বিভাগ
সুশান্ত বৰগোহাঁই	নগৰ উন্নয়ন, গৃহ নিৰ্মাণ আৰু নগৰ পৰিকল্পনা
চৰণ বড়ো	বড়োলেণ্ড কল্যাণ আৰু জনজাতি বিষয়ক বিভাগ

জুবিন গাৰ্গৰ গুণগুণনিৰ ৰহস্য উন্মোচন আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় গৱেষণাত

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

অসমৰ সংগীত জগতৰ জনপ্ৰিয়তম শিল্পীসকলৰ অন্যতম জুবিন গাৰ্গৰ মোহনীয় গুণগুণনিৰ আঁৰৰ ৰহস্য অৱশেষত উন্মোচিত হল বিজ্ঞানৰ পোহৰত। বিশ্বৰ অন্যতম সন্মানীয় কণ্ঠবিজ্ঞান বিষয়ক গৱেষণা পত্ৰিকা 'দ্য জাৰ্নেল অৱ ভইচ'-ত প্ৰকাশিত এক বিস্তৃত অধ্যয়নে প্ৰথমবাৰৰ বাবে তথ্য, পৰিমাপ আৰু বৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণৰ সহায়ত ব্যাখ্যা কৰিছে কিয় জুবিন গাৰ্গৰ গুণগুণনিয়ে লাখ লাখ শ্ৰোতাৰ হৃদয় স্পৰ্শ কৰে।

হাণ্ডিক ছোৱালী মহাবিদ্যালয়ৰ পদাৰ্থ বিজ্ঞান বিভাগৰ গৱেষক কিশোৰ দত্ত আৰু জ্যোৎস্না শইকীয়াই সম্পন্ন কৰা এই গৱেষণাই অসমৰ সংগীত ঐতিহ্যক বিশ্বৰ বৈজ্ঞানিক সমাজত এক নতুন মৰ্যাদা প্ৰদান কৰিছে। গৱেষকসকলে কয় যে জুবিন গাৰ্গৰ গুণগুণনিৰ বিষয়ে বহু আলোচনা, প্ৰশংসা আৰু জনবিশ্বাস থাকিলেও এতিয়ালৈকে ইয়াৰ বৈজ্ঞানিক ভিত্তি পৰীক্ষা কৰা হোৱা নাছিল। দীৰ্ঘদিন ধৰি অনুৰাগীসকলে জুবিন গাৰ্গক 'বিশ্বৰ গুণগুণনি সম্ৰাট' বুলি আখ্যা দি আহিছে। তেওঁৰ অসংখ্য গীতত সন্নিবিষ্ট গুণগুণনিৰ অংশই শ্ৰোতাসকলক এক বিশেষ অনুভূতি প্ৰদান কৰি আহিছে। এতিয়া গৱেষণাই প্ৰমাণ কৰিছে যে এই অনুভূতি কেৱল মানসিক বা কল্পনাপ্ৰসূত নহয়, বৰং ইয়াৰ আঁৰত আছে কণ্ঠৰ এক বিশেষ ধৰণৰ গঠন আৰু ধ্বনিৰ বৈজ্ঞানিক বৈশিষ্ট্য।

গৱেষণাত প্ৰকাশ পাইছে যে জুবিন গাৰ্গৰ গুণগুণনিত কণ্ঠৰ অসাধাৰণ স্থিৰতা, সুৰৰ গভীৰতা, ধ্বনিৰ সমৃদ্ধতা আৰু আৱেগময় কম্পনৰ এক বিৰল সমন্বয় দেখা যায়। তেওঁৰ গুণগুণনিত ব্যৱহৃত নিম্ন ধ্বনি-কম্পনে এক কোমল, গভীৰ আৰু মধুৰ অনুভূতি সৃষ্টি কৰে, যিয়ে শ্ৰোতাৰ মনত শান্তি আৰু আৱেগৰ সঞ্চাৰ কৰে।

একেসময়তে কণ্ঠৰ সূক্ষ্ম আৰু ক্ষিপ্ৰ কম্পনসমূহে তেওঁৰ গুণগুণনিত এক জীৱন্ততা আৰু স্পন্দন যোগায়। ফলস্বৰূপে শ্ৰোতাই কেৱল সুৰ শুনাই নহয়, সুৰৰ মাজত নিহিত অনুভূতিকো গভীৰভাৱে উপলব্ধি কৰে। গৱেষকসকলৰ মতে, জুবিন গাৰ্গৰ গুণগুণনি কোনো সাধাৰণ সংগীত কৌশল নহয়। ই তেওঁৰ স্বৰতন্ত্ৰ, কণ্ঠনালী আৰু কণ্ঠৰ জৈৱিক গঠনৰ পৰা উদ্ভৱ হোৱা এক বিশেষ ধ্বনি-প্ৰক্ৰিয়া। এই কাৰণেই তেওঁৰ গুণগুণনি আন শিল্পীৰ গুণগুণনিৰ তুলনাত সহজে চিনাক্ত কৰিব পাৰি।

অধ্যয়নত আৰু দেখা ১০ পৃষ্ঠাত

পথৰ কাষতে জীৱিকাৰ সংগ্ৰাম

জন জন বিচাৰ
...✍ যুগান্ত অসীম গগৈ
গুৱাহাটী

মহানগৰীৰ ব্যস্ত জীৱনৰ মাজতো আজিও বহু লোক আছে যিসকলে কঠোৰ পৰিশ্ৰম আৰু সৎ বাণিজ্যৰ জৰিয়তে পৰিয়ালৰ জীৱিকা নিৰ্বাহ কৰি আহিছে। গুৱাহাটীৰ কৃষি ভৱনৰ সমীপত পথৰ কাষত ফলমূল বিক্ৰী কৰা এজন বৃদ্ধ বিক্ৰেতাই বহু পথচাৰীৰ দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰিছে।

জানিব পৰা মতে, মৰিগাঁও জিলাৰ আহতগুৰি গাঁৱৰ বাসিন্দা দাস দাদাইদেউয়ে প্ৰতিদিনে গুৱাহাটীলৈ আহি স্থানীয় আম, কোমোৰা আৰু অন্যান্য ফলমূল বিক্ৰী কৰি পৰিয়ালৰ জীৱিকা চলাই আহিছে। ডাঙৰ বজাৰ আৰু আধুনিক শ্বপিং মলৰ যুগতো তেওঁ নিজৰ সৰু পথকাষৰ দোকানখনত ধৈৰ্যসহকাৰে গ্ৰাহকৰ অপেক্ষা কৰি থাকে। ফটোখনতো বহু গ্ৰাহকক তেওঁৰ পৰা ফলমূল ক্ৰয় কৰা দেখা গৈছে।

বৰ্তমান গুৱাহাটীৰ বিভিন্ন স্থানৰ পদপথত অসংখ্য বিক্ৰেতাই ব্যৱসায় চলাই আছে, যিসকলৰ বহুজন স্থানীয় লোকৰ বাবে অপৰিচিত। এনে সময়ত নিজে উৎপাদন কৰা বা সংগ্ৰহ কৰা স্থানীয় ফলমূল বিক্ৰী কৰা এজন স্থানীয় বৃদ্ধ কৃষকক দেখি বহু লোক আৱেগাপ্লুত হৈ পৰিছে। মৰিগাঁও জিলাৰ আহতগুৰিৰ পৰা গুৱাহাটীলৈ আহি জীৱিকাৰ সন্ধান কৰা এনে ক্ষুদ্ৰ বিক্ৰেতাসকলে আজিও বহু সমস্যাৰ সন্মুখীন হ'বলগীয়া হয়। বিভিন্ন সামাজিক সংগঠন আৰু অনুষ্ঠানসমূহেও পথকাষৰ বিক্ৰেতাসকলৰ সমস্যা আৰু সংগ্ৰামৰ বিষয়ে সময়ে সময়ে আলোকপাত কৰি আহিছে বুলি সাংবাদিক গগৈয়ে উল্লেখ কৰে।

এইসন্দৰ্ভত গ্ৰাহক তথা যুৱ নেতা ধৰ্মকান্ত গগৈয়ে কয়, 'মৰিগাঁও জিলাৰ আহতগুৰিৰ দাস দাদাইদেউৰ সৈতে সাক্ষাৎ কৰি মোৰ অত্যন্ত ভাল লাগিল।

সেইবাবে মই তেওঁৰ পৰা কেইটামান স্থানীয় আম, এটা কোমোৰা আৰু কিছু শাক-পাচলি ক্ৰয় কৰিলোঁ। স্থানীয় লোকৰ পৰিশ্ৰম আৰু সততাক সন্মান জনোৱাটো আমাৰ সকলোৰে দায়িত্ব।'দাস দাদাইদেউৰ দৰে ক্ষুদ্ৰ স্থানীয় বিক্ৰেতাসকলৰ সংগ্ৰাম, আত্মনিৰ্ভৰশীলতা আৰু দৃঢ় সংকল্পই সমাজলৈ এক ইতিবাচক বাৰ্তা কঢ়িয়াই আনে। ইআমাক স্থানীয় জীৱিকা আৰু ক্ষুদ্ৰ ব্যৱসায়ীক সমৰ্থন জনোৱাৰ লগতে সৎশ্ৰমৰ মূল্য উপলব্ধি কৰিবলৈ অনুপ্ৰাণিত কৰে।

নাজিৰাৰ আইদেউবাৰীত ২ কেজিৰো অধিক গাঞ্জা জব্দ

জন জন বিচাৰ
...✍ নাজিৰা

নাজিৰা সমজিলাৰ অন্তৰ্গত আইদেউবাৰীত গেলেকী আৰক্ষীয়ে চলোৱা এক বিশেষ অভিযানত প্ৰায় ২ কেজি ৯৫ গ্ৰাম গাঞ্জা জব্দ কৰাৰ লগতে তিনিজন যুৱকক আটক কৰে। গোপন সূত্ৰৰ পম খেদি আৰক্ষী আৰু বেটেলিয়ন বাহিনীৰ এটা দলে আইদেউবাৰীত তালাচী অভিযান চলাই থকা সময়ত দুখন মটৰচাইকেলত অহা যুৱকক ৰখাবলৈ সংকেত দিয়ে। কিন্তু তেওঁলোকে পলাবলৈ চেষ্টা কৰাত আৰক্ষীয়ে আগভেটি ধৰি তালাচী চলাই দুটা বেগৰ পৰা গাঞ্জাখিনি উদ্ধাৰ কৰে।

আৰক্ষীয়ে এ এছ-০৩ এ জে-১৪৪৫ আৰু এ এছ-০৪ এ কে-৭৭২৭ নম্বৰৰ মটৰচাইকেল দুখন জব্দ কৰাৰ লগতে আইদেউবাৰীৰ বিশ্ব আৰন্ধৰা, বিজিৎ বৰুৱা আৰু বৰবাৰীৰ অপূৰ্ব গগৈক আটক কৰে। লগতে তিনিটা মোবাইল ফোনো জব্দ কৰা হয়।

গেলেকী আৰক্ষী থানাত এনডিপিএছ আইনৰ অধীনত গোচৰ ৰুজু কৰি তিনিওজন অভিযুক্তক গ্ৰেপ্তাৰ কৰি ন্যায়িক জিম্মালৈ প্ৰেৰণ কৰা হৈছে।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

১২-০৬-২০২৬ৰ পৰা ১৮-০৬-২০২৬লৈ

মেষ ৰাশিঃ মানসিক সুখ-শান্তি থাকিব। অপুষ্টিকৰ খাদ্যৰ ফলত পেটৰ সমস্যা হ'ব পাৰে। বিদ্যাৰ্থীসকলৰ বাবে সপ্তাহটো শুভ।

বৃষ ৰাশি ঃ কৰ্মক্ষেত্ৰত মানসিক অস্থিৰতা আহিব পাৰে। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভৰ সম্ভাৱনা আছে।

মিথুন ৰাশি ঃ আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ। পিতৃৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি যত্ন লওক। কৰ্মক্ষেত্ৰত সুস্থিৰতা বৃদ্ধি পাব।

কৰ্কট ৰাশি ঃ কৰ্মক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ। অযথা ব্যয় বৃদ্ধিৰ পৰা সাৱধান হওক। প্ৰেমৰ ক্ষেত্ৰতো শুভ ফল লাভ কৰিব।

সিংহ ৰাশি ঃ মানসিক সুখ বৃদ্ধি পাব। পত্নীৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি যত্ন লওক। কৰ্মক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ দেখা যায়।

কন্যা ৰাশি ঃ বিদ্যাৰ্থীসকলৰ বাবে শুভ। পত্নীৰ স্বাস্থ্যৰ উন্নতি দেখা যায়। কৰ্মক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ।

তুলা ৰাশি ঃ আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ। কৰ্মক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো কিছু খামখেয়ালিপনাৰ মাজেৰে পাৰ হ'ব পাৰে। বিদ্যাৰ ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ কৰিব।

বৃশ্চিক ৰাশি ঃ শাৰীৰিক ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত কিছু বাধাৰ সৃষ্টি হ'ব পাৰে। মানসিক শান্তি বৃদ্ধি পাব।

ধনু ৰাশি ঃ শৰীৰৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি যত্ন লওক। আকস্মিক কোনো ঘটনাৰ ফলত মানসিক অশান্তি আহিব পাৰে। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ।

মকৰ ৰাশি ঃ শাৰীৰিক উন্নতি দেখা যায়। বাদ-বিবাদৰ পৰা বিৰত থাকক। চেষ্টাৰ সফলতা লাভ কৰিব।

কুম্ভ ৰাশি ঃ কৰ্মক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ। স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি যত্ন লওক। প্ৰেমৰ ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ।

মীন ৰাশি ঃ স্বাস্থ্যৰ উন্নতি দেখা যায়। কৰ্মক্ষেত্ৰত আকস্মিক অসুবিধাৰ সন্মুখীন হ'ব পাৰে। বিদ্যাৰ্থীসকলৰ বাবে সপ্তাহটো শুভ।

- হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

আমগুৰিত বজাৰ পৰিদৰ্শন অভিযান

অত্যাৱশ্যকীয় সামগ্ৰীৰ মূল্য আৰু উপলব্ধতা পৰ্যবেক্ষণ

জন জন বিচাৰ
...✍ নাজিৰা

অত্যাৱশ্যকীয় সামগ্ৰীৰ মূল্যবৃদ্ধি নিয়ন্ত্ৰণ আৰু সামগ্ৰীৰ পৰ্যাপ্ত উপলব্ধতা নিশ্চিত কৰাৰ লক্ষ্যৰে ১০জুনত আমগুৰি নগৰত নাজিৰা সম-জিলা প্ৰশাসনে এক বজাৰ পৰিদৰ্শন অভিযান চলায়।

অভিযানৰ সময়ত বিষয়াসকলে বিভিন্ন ব্যৱসায়িক প্ৰতিষ্ঠান আৰু দোকান পৰিদৰ্শন কৰি অত্যাৱশ্যকীয় সামগ্ৰীৰ বিক্ৰী মূল্য পৰ্যালোচনা কৰে। লগতে মূল্য তালিকা প্ৰদৰ্শন, মজুত ব্যৱস্থা আৰু চৰকাৰী নিৰ্দেশনা অনুসৰি সামগ্ৰী বিক্ৰী কৰা হৈছে নে নাই, সেই বিষয়েও পৰীক্ষা-নিৰীক্ষা চলোৱা হয়।

বিষয়াসকলে ব্যৱসায়ীসকলক ন্যায্য মূল্যত সামগ্ৰী বিক্ৰী নিশ্চিত কৰাৰ লগতে গ্ৰাহকৰ স্বাৰ্থ সুৰক্ষিত ৰাখিবলৈ চৰকাৰী নিয়ম-নীতি কঠোৰভাৱে মানি চলিবলৈ আহ্বান জনায়। যিকোনো ধৰণৰ মূল্যবৃদ্ধি, কৃত্ৰিম নাটনি সৃষ্টি বা অনিয়মৰ বিৰুদ্ধে কঠোৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা হ'ব বুলিও সতৰ্ক কৰি দিয়ে।

এই পৰিদৰ্শন অভিযানৰ নেতৃত্ব দিয়ে আমগুৰি চক্ৰ বিষয়া অৰূপ বিৰকামিয়াই। অভিযানত খাদ্য, অসামৰিক যোগান আৰু গ্ৰাহক পৰিক্ৰমা বিভাগৰ বিষয়াসকলেও অংশগ্ৰহণ কৰে। প্ৰশাসনৰ এই পদক্ষেপে বজাৰত মূল্য নিয়ন্ত্ৰণ বজাই ৰখা আৰু গ্ৰাহকসকলৰ স্বাৰ্থ সুৰক্ষিত কৰাত সহায়ক হ'ব বুলি আশা প্ৰকাশ কৰা হৈছে।

পৃষ্ঠাৰ ৯ পৰা

জুবিন গাৰ্গৰ গুণগুণনিৰ ৰহস্য উন্মোচন আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় গৱেষণাত

গৈছে যে তেওঁৰ গুণগুণনিত ধ্বনিৰ বিশুদ্ধতা আৰু স্থিৰতা একে সময়তে বজাই থাকে। এই বিশেষ বৈশিষ্ট্যই তেওঁৰ কণ্ঠক আৱেগময় অথচ নিয়ন্ত্ৰিত ৰূপ প্ৰদান কৰে। সংগীত জগতত এনে সমন্বয় অতি বিৰল বুলি গৱেষকসকলে মত প্ৰকাশ কৰিছে।

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, এই গৱেষণাই কেৱল জুবিন গাৰ্গৰ অনন্য প্ৰতিভাক বৈজ্ঞানিক স্বীকৃতি দিয়াই নহয়, কণ্ঠবিজ্ঞান, সংগীত শিক্ষা আৰু ধ্বনি-গৱেষণাৰ ক্ষেত্ৰতো নতুন সম্ভাৱনাৰ দুৱাৰ মুকলি কৰিছে। ভৱিষ্যতে সংগীতশিল্পীসকলৰ কণ্ঠৰ গুণাগুণ বিশ্লেষণ আৰু সংৰক্ষণৰ ক্ষেত্ৰতো এই অধ্যয়ন সহায়ক হব পাৰে।

অসমৰ সংগীত ইতিহাসত ডঃ ভূপেন হাজৰিকাৰ পিছত জুবিন গাৰ্গক এক সাংস্কৃতিক শক্তি হিচাপে গণ্য কৰা হয়। তেওঁৰ গীত, সুৰ আৰু কণ্ঠই বহু প্ৰজন্মক একত্ৰিত কৰিছে। এনে সময়ত তেওঁৰ গুণগুণনিৰ বৈজ্ঞানিক স্বীকৃতিয়ে সমগ্ৰ অসমবাসীক গৌৰৱান্বিত কৰিছে।

জুবিন গাৰ্গৰ গুণগুণনিৰ ওপৰত সম্পন্ন এই গৱেষণাই পুনৰ এবাৰ প্ৰমাণ কৰিলে যে অসমৰ সাংস্কৃতিক সম্পদ আৰু সৃষ্টিশীল শক্তি বিশ্বৰ যিকোনো মঞ্চত নিজৰ স্থান দখল কৰিবলৈ সক্ষম। যি কণ্ঠই দীৰ্ঘদিন ধৰি মানুহৰ হৃদয় জয় কৰি আহিছে, সেই কণ্ঠৰ যাদুক এতিয়া বিজ্ঞানো স্বীকাৰ কৰিলে। অসমৰ সংগীত জগতৰ বাবে ই নিঃসন্দেহে এক ঐতিহাসিক মুহূৰ্ত।

এন চি ই আৰ টিৰ ৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়ৰ আলোচনা চক্ৰলৈ গুৱাহাটীৰ শিক্ষক

জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

ৰাষ্ট্ৰীয় শৈক্ষিক গৱেষণা আৰু প্ৰশিক্ষণ পৰিষদ (এন চি ই আৰ টি) এ বিদ্যালয় আৰু শিক্ষক শিক্ষা প্ৰতিষ্ঠানৰ বাবে অনুষ্ঠিত কৰা ২০২৫-২৬বৰ্ষৰ উদ্ভাৱনীমূলক পদ্ধতি আৰু পৰীক্ষা বিষয়ৰ ৰাষ্ট্ৰীয় আলোচনা চক্ৰলৈ কামৰূপ মহানগৰ জিলাৰ গুৱাহাটী শিক্ষা খণ্ডৰ শিক্ষক চৈয়দ আব্দুৰ ৰছিদ চৌধুৰী নিৰ্বাচিত হৈছে। বিদ্যালয় আৰু শিক্ষক শিক্ষা প্ৰতিষ্ঠানৰ প্ৰশিক্ষকসকলৰ মাজত শিক্ষাৰ উদ্ভাৱনীমূলক পদ্ধতি আৰু পৰীক্ষা-নিৰীক্ষাৰ প্ৰসাৰ বৃদ্ধিৰ বাবে এন চি আৰ টিয়ে প্ৰতি বছৰে গৱেষণামূলক প্ৰকল্প আহ্বান কৰে প্ৰকল্পৰ প্ৰতিবেদন দাখিল কৰাৰ পিছত হে মূল আলোচনা চক্ৰলৈ এজন শিক্ষক বা শিক্ষক প্ৰশিক্ষকে আমন্ত্ৰণ লাভ কৰে। উত্তৰ গুৱাহাটীৰ আনন্দৰাম উচ্চ বুনিয়াদী বিদ্যালয়ৰ সহকাৰী শিক্ষক চৈয়দ আব্দুৰ ৰছিদ চৌধুৰীৰ প্ৰকল্পৰ বিষয় আছিল উচ্চপ্ৰাথমিক পৰ্যায়ৰ সমাজ বিজ্ঞানত খেলভিত্তিক শিকন বিজ্ঞানৰ আহিলা হিচাপে ভ্ৰমণোত্তৰ কুইজ ব্যৱহাৰ কৰা। চলিত জুন মাহৰ ২৯ আৰু ৩০ তাৰিখে এন চি আৰ টিৰ নতুন দিল্লীৰ মুখ্য কাৰ্যালয়ত এই আলোচনা চক্ৰ অনুষ্ঠিত হব। এন চি আৰ টিৰ আঞ্চলিক শিক্ষা প্ৰতিষ্ঠানৰ অঞ্চল ভিত্তিত শিক্ষক আৰু শিক্ষক প্ৰশিক্ষকসকলক বাচনি কৰা হয়। এইবাৰ সৰ্বমুঠ ৩১ জনে আমন্ত্ৰণ লাভ কৰিছে। উত্তৰ-পূব আঞ্চলিক শিক্ষা প্ৰতিষ্ঠানৰ অধীনৰ আঠখন ৰাজ্যৰ কেৱল মাত্ৰ এজন শিক্ষকে আমন্ত্ৰণ লাভ কৰিছে।

জিলা পুথিভঁৰালত গণ অভিৱৰ্তন

নাৰী নিৰ্যাতন, অশ্লীলতা-অপসংস্কৃতি, মদ আৰু মাদক দ্ৰব্যৰ প্ৰচলন বন্ধ কৰাৰ দাবী

জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

গুৱাহাটী জিলা পুথিভঁৰাল প্ৰেক্ষাগৃহত অল ইণ্ডিয়া মহিলা সাংস্কৃতিক সংগঠনৰ অসম ৰাজ্যিক কমিটীৰ উদ্যোগত ক্ৰমবৰ্ধমান নাৰী নিৰ্যাতন, অশ্লীলতা-অপসংস্কৃতি আৰু মদ আৰু মাদক দ্ৰব্যৰ প্ৰচলন কঠোৰ হাতেৰে সম্পূৰ্ণৰূপে বন্ধ কৰাৰ দাবীত এখন গণ অভিৱৰ্তন অনুষ্ঠিত হয়। ৰাজ্যৰ বিভিন্ন জিলাৰ পৰা সহস্ৰাধিক মহিলা-পুৰুষ তথা বিশিষ্ট ব্যক্তি সকলৰ উপস্থিতিত অনুষ্ঠিত এই অভিৱৰ্তন পৰিচালনা কৰে সংগঠনৰ ৰাজ্যিক সভানেত্ৰী ডাঃ চিত্ৰলেখা দাসে। অভিৱৰ্তনত বক্তব্য ৰাখে ৰূপকোঁৱৰ জ্যোতিপ্ৰসাদ আগৰৱালাৰ জীয়ৰী জ্ঞানশ্ৰী পাঠক, মনোৰোগ বিশেষজ্ঞ ডাঃ দ্বীপেশ ভাগৱতী, বিশিষ্ট জননেত্ৰী অধ্যাপিকা চন্দ্ৰলেখা দাস, সংগঠনৰ প্ৰাক্তন ৰাজ্যিক সভানেত্ৰী, বিশিষ্ট শিক্ষিকা ইনা হুছেইন আৰু বিশিষ্ট সাহিত্যিক শিৱানন্দ কাকতিয়ে। অভিৱৰ্তনৰ আৰু এগৰাকী বক্তা মীনাক্ষী ভুঞা শাৰীৰিক কাৰণত উপস্থিত থাকিব নোৱাৰে যদিও অভিৱৰ্তনৰ উদ্যোক্তা আৰু প্ৰতিনিধি সকললৈ শুভেচ্ছা বাৰ্তা প্ৰেৰণ কৰে। এই শুভেচ্ছা বাৰ্তা পাঠ কৰে সভানেত্ৰী ডাঃ চিত্ৰলেখা দাসে।

নগাঁৱৰ সংগীত গোষ্ঠীৰ দ্বাৰা পৰিবেশিত উদ্বোধনী সংগীতেৰে আৰম্ভ হোৱা অভিৱৰ্তনত মূল প্ৰস্তাৱ উত্থাপন কৰে সংগঠনৰ ৰাজ্যিক সম্পাদিকা অধ্যাপিকা বৰ্ণালী শৰ্মাই। মূল প্ৰস্তাৱৰ উপৰিও সদ্যহতে অসম চৰকাৰে প্ৰৱৰ্তন কৰা ইউনিফৰ্ম চিভিল কোড সম্পৰ্কে আৰু এটি প্ৰস্তাৱ গ্ৰহণ কৰে।

ৰহাঃ কপিলী প্ৰাথমিক শিক্ষাখণ্ডৰ উদ্যোগত ৰহা বুনিয়াদী প্ৰশিক্ষণ কেন্দ্ৰত অনুষ্ঠিত এক গাম্ভীৰ্যপূৰ্ণ সভাত অৱসৰপ্ৰাপ্ত খণ্ড সমল ব্যক্তি বিজয়ানন্দ লস্কৰলৈ বিদায় সম্বৰ্ধনা জ্ঞাপন কৰা হয়।

অৰ্ধসত্য ভুলতকৈও ভয়ংকৰ : প্ৰখৰ শ্ৰীবাস্তৱ

জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

সাংবাদিকতাত ভুলতকৈও ডাঙৰ বিপদ অৰ্ধসত্যৰ প্ৰকাশ আৰু বিচাৰ। নাৰদ জয়ন্তীত মূল ভাষণ প্ৰদান কৰি এই বিশেষ মন্তব্য দিল্লীৰ দূৰদৰ্শন কেন্দ্ৰৰ জ্যেষ্ঠ পৰামৰ্শদাতা তথা সাংবাদিক প্ৰখৰ শ্ৰীবাস্তৱৰ। ৭ জুন দেওবাৰে বিশ্ব সংবাদ কেন্দ্ৰ অসমৰ উদ্যোগত আয়োজিত নাৰদ জয়ন্তীত প্ৰদান কৰা হয় দেৱৰ্ষি নাৰদ বঁটা তথা সম্বৰ্ধনা অনুষ্ঠান। এইবাৰ দেৱৰ্ষি নাৰদ বঁটা প্ৰদান কৰা হয় জ্যেষ্ঠ সাংবাদিক তথা ঈষাণ দৰ্পণৰ সম্পাদক নৱ ঠাকুৰীয়াক। ৩ যুৱ সাংবাদিক এন কে টিভিৰ জ্যেষ্ঠ সাংবাদিক লক্ষ্যজ্যোতি গোহাঁই, প্ৰথম খবৰৰ ছীফ ৰিপৰ্টাৰ ৰঞ্জিতা ৰাভা আৰু দৈনিক অসমৰ উপ সম্পাদক মৃদুল হালৈক জনোৱা হয় নাৰদ জয়ন্তীৰ বিশেষ সম্বৰ্ধনা।

গুৱাহাটীৰ বৰবাৰীৰ সুদৰ্শনালয়ত আয়োজিত অনুষ্ঠানত সাম্প্ৰতিক সামাজিক-ৰাজনৈতিক পৰিস্থিতি আৰু অতীতত এইক্ষেত্ৰত হোৱা ভুলৰ বিষয়ে তথ্যপূৰ্ণ গুৰুত্বপূৰ্ণ ভাষণ প্ৰদান কৰে প্ৰখৰ শ্ৰীবাস্তৱে। সম্প্ৰতি শতবৰ্ষ পালন কৰি থকা সংগঠন আৰ এছ এছ প্ৰসংগত তাৎপৰ্যপূৰ্ণ মন্তব্য কৰে শ্ৰীবাস্তৱে। 'সাম্প্ৰতিক পৰিৱৰ্তিত ৰাজনৈতিক প্ৰেক্ষাপটত সংঘৰ প্ৰতি সংবাদ মাধ্যমে ইতিবাচক দৃষ্টিভংগী ল'লেও অতীতত এয়া আছিল দুৰ্লভ।

১৯২৫ চনত স্থাপন হোৱা সংঘৰ প্ৰতি সংবাদ মাধ্যমে সামান্য দৃষ্টি দিয়াৰ সময়তে দেশ সন্মুখীন হৈছিল বিভাজনৰ। সি সময়ত পাকিস্তানৰ সিন্ধ প্ৰদেশৰ জ্যেষ্ঠ কংগ্ৰেছী নেতাসকলে টালি-টোপোলা লৈ ভাৰতলৈ আহিছিল, সেই সময়ত সিন্ধ প্ৰদেশত সংঘৰ স্বয়ংসেৱকে মৌলবাদীৰ আক্ৰমণৰ বলি হিন্দু, শিখ আদিক উদ্ধাৰৰ বাবে জীৱনৰ জুৱা খেলিছিল'। স্বাধীনতাৰ পাছতে প্ৰতিৰক্ষা মন্ত্ৰী বলদেৱ সিঙে গৃহমন্ত্ৰী বল্লভভাই পেটেললৈ লিখা পত্ৰৰ বিশেষ উল্লেখ কৰে প্ৰখৰ শ্ৰীবাস্তৱে।

বিভাজনৰ পাছত পাকিস্তানত বিপদৰ সন্মুখীন হোৱা লোকক উদ্ধাৰৰ বাবে সংঘই কৰা প্ৰচেষ্টাক চৰকাৰে সহযোগ কৰাৰ আহ্বান জনাই লিখা পত্ৰখন কেবিনেটত উত্থাপনৰ পৰামৰ্শ দিছিল চৰ্দাৰ পেটেলে।

কিন্তু এনে ঘটনাই প্ৰধানমন্ত্ৰী নেহৰুৰ মনত দুৰ্ভাগ্যক্ৰমে সৃষ্টি কৰিছিল বিদ্বেষৰ ভাব। গান্ধী হত্যাৰ অভিযোগতকৈও পাকিস্তানত সংঘই কৰা উদ্ধাৰ অভিযানত বিতুষ্ট হৈহে নেহৰুৱে নিষেধাজ্ঞা জাৰি কৰিছিল বুলি তাৎপৰ্যপূৰ্ণ মন্তব্য কৰে প্ৰখৰ দ্ৰশ্ৰীবাস্তৱে। 'স্বাধীন ভাৰতত গান্ধী হত্যাক কেন্দ্ৰীয় কৰি হৈছিল প্ৰথম গণ নিগ্ৰহৰ ঘটনা। এই গণ নিগ্ৰহ প্ৰথম কৰিছিল তথাকথিত একাংশ গান্ধীবাদীয়ে, প্ৰথম বলি হৈছিল ডম্বু নাৰায়ণ সাভাৰকাৰ আৰু বীৰ সাভাৰকাৰৰ পৰিয়াল হৈছিল দেশৰ প্ৰথম গণ নিগ্ৰহৰ মূল্য দিয়া পৰিয়াল'। অসমত চাদুল্লা দিনৰ পৰা হোৱা প্ৰব্ৰজন, জনগাঁথনি পৰিৱৰ্তন, মইনুল হক-ফকৰুদ্দিন আলী আহমেদ আদিৰ ভূমিকা সন্দৰ্ভতো মন্তব্য কৰে প্ৰখৰ শ্ৰীবাস্তৱে।

শ্ৰদ্ধাঞ্জলি

ৰে'ল আলিত বুকু পাতি দিয়া সাহসী মাতৃগৰাকী আৰু নাই

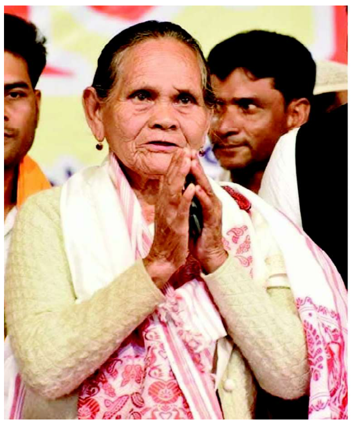

অসমৰ জাতীয়তাবাদী চেতনাৰ এক সাহসী প্ৰতীক, কৃষক আন্দোলনৰ এক নীৰৱ শক্তি আৰু ৰাইজৰ দলৰ সভাপতি তথা শিৱসাগৰৰ বিধায়ক অখিল গগৈৰ মাতৃ প্ৰিয়দা গগৈৰ মৃত্যুত অসমৰ জনজীৱনত এক অপূৰণীয় শূন্যতাৰ সৃষ্টি হৈছে। ৯৪ বছৰীয়া প্ৰিয়দা গগৈয়ে কেৱল এগৰাকী মাতৃ হিচাপেই নহয়, এগৰাকী সংগ্ৰামী নাৰী হিচাপেও নিজকে প্ৰতিষ্ঠা কৰিছিল।

স্কুলীয়া অৱস্থাতেই স্বাধীনতা আন্দোলনৰ সংস্পৰ্শলৈ অহা প্ৰিয়দা গগৈয়ে কৃষক আন্দোলন, সামাজিক সংগ্ৰাম আৰু জাতীয় স্বাৰ্থৰ প্ৰশ্নত সদায় অগ্ৰণী ভূমিকা পালন কৰিছিল। পুত্ৰ অখিল গগৈ কাৰাবন্দী হৈ থকা সময়ত তেওঁৰ মুক্তিৰ দাবীত ৰে'ল আলিত বুকু পাতি প্ৰতিবাদ সাব্যস্ত কৰা দৃশ্য আজিও অসমৰ মানুহৰ মনত অম্লান। নাগৰিকত্ব সংশোধনী আইন বিৰোধী আন্দোলনৰ সময়তো তেওঁ অনশন ধৰ্মঘট কৰি সংগ্ৰামৰ এক নতুন উদাহৰণ দাঙি ধৰিছিল।

২০২১ চনৰ বিধানসভা নিৰ্বাচনত বৃদ্ধ বয়সতো ভোটাৰৰ দুৱাৰে দুৱাৰে গৈ পুত্ৰৰ বাবে সমৰ্থন বিচৰা মাতৃগৰাকী আছিল অখিল গগৈৰ সংগ্ৰামী জীৱনৰ অন্যতম প্ৰেৰণাৰ উৎস। অখিল গগৈয়ে এদিন কৈছিল- 'মোৰ জীৱনটো যদি কোনোবাই গঢ়িছিল, সেয়া মা।'

লুখুৰাখনৰ মাটিত আজি চিৰনিদ্ৰাত শুই পৰিল সেই সাহসী মাতৃগৰাকী। কিন্তু তেওঁৰ আদৰ্শ, ত্যাগ আৰু সংগ্ৰামী চেতনা অসমৰ জনমানসত চিৰদিন জীয়াই থাকিব।

-কৃষ্ণ প্ৰসাদ শৰ্মা, মৰিয়নি

সম্পাদকীয়

অসমৰ বাবে এক নতুন উন্নয়নৰ দিগন্ত

ইউৰোপীয় ইউনিয়নৰ ভাৰতস্থিত ৰাষ্ট্ৰদূত হাৰ্ভে ডেলফিনে গুৱাহাটীত ব্লু ভেলী ক্লাষ্টাৰ উদ্বোধন কৰি দিয়া বক্তব্যই অসমৰ উন্নয়ন যাত্ৰাত এক নতুন আশাৰ সঞ্চাৰ কৰিছে। ক্টঅসমৰ পৰা সম্পদ সংগ্ৰহ কৰি বাহিৰলৈ লৈ যোৱা নহয়, বৰঞ্চ ইয়াতেই গৱেষণা, উদ্ভাৱন, উৎপাদন আৰু বজাৰ ব্যৱস্থা গঢ়ি তোলাক্ট- এই দৃষ্টিভংগীয়ে ৰাজ্যখনৰ অৰ্থনৈতিক সম্ভাৱনাক নতুন মাত্ৰা প্ৰদান কৰিছে।

দীঘলীয়া সময় ধৰি অসমৰ প্ৰাকৃতিক সম্পদ আৰু কৃষিভিত্তিক উৎপাদনে বহিঃৰাজ্য আৰু বিদেশী বজাৰক সমৃদ্ধ কৰিছে যদিও মূল্য সংযোজনৰ মূল লাভ স্থানীয়ভাৱে সীমিত হৈ আছিল। ব্লু ভেলী ক্লাষ্টাৰে এই ধাৰণাক সলনি কৰাৰ এক সুযোগ কঢ়িয়াই আনিছে। বিশেষকৈ সুগন্ধি উদ্ভিদ, ঔষধি গছ-গছনি, আয়ুষ আৰু জৈৱ বৈচিত্ৰ্যঞ্জযভিত্তিক উদ্যোগৰ ক্ষেত্ৰত অসমৰ বিশাল সম্ভাৱনা আছে।

ইউৰোপীয় ইউনিয়নে নবীকৰণযোগ্য শক্তি, ডিজিটেল প্ৰযুক্তি, ইলেক্ট্ৰনিকছ আৰু উন্নত উৎপাদন খণ্ডতো আগ্ৰহ প্ৰকাশ কৰাটো ৰাজ্যখনৰ বাবে ইতিবাচক সংকেত। অৱশ্যে এই সুযোগৰ পূৰ্ণ সদ্ব্যৱহাৰৰ বাবে চৰকাৰ, উদ্যোগপতি, শিক্ষানুষ্ঠান আৰু স্থানীয় সম্প্ৰদায়ৰ মাজত সমন্বয় আৱশ্যক।

বিদেশী বিনিয়োগৰ সফলতা কেৱল চুক্তি স্বাক্ষৰত নহয়; স্থানীয় যুৱসমাজৰ বাবে নিয়োগ সৃষ্টি, দক্ষতা বিকাশ আৰু টেকসই উন্নয়ন নিদ্ৰিশ্চত কৰাতহে নিহিত। যদি এই লক্ষ্যসমূহ বাস্তৱায়িত হয়, তেন্তে অসমে কেৱল উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰেই নহয়, সমগ্ৰ দক্ষিণ এছিয়াৰ এক উদীয়মান অৰ্থনৈতিক কেন্দ্ৰ হিচাপে আত্মপ্ৰকাশ কৰিব পাৰিব।

বিহাৰী, বহিৰাগত আৰু অনা-অসমীয়া

জন জন বিচাৰ

...✍ প্ৰমোদ তিৱাড়ী

গুৱাহাটীৰ আৰ্য নগৰ (শৰাবভট্টী)ত শেহতীয়াকৈ সংঘটিত ঘটনাই পুনৰ এবাৰ এই প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে যে ছ'চিয়েল মিডিয়াৰ যুগত সমাজ, প্ৰশাসন, সংবাদ মাধ্যম আৰু নাগৰিকৰ দায়িত্ব কি হওঁ উচিত। যিকোনো গণতান্ত্ৰিক সমাজত আইনৰ শাসনক সৰ্বোচ্চ স্থান দিয়া হয়, কিন্তু আজিৰ ডিজিটেল যুগত বহু সময়ত ঘটনা এটাৰ নিষ্পত্তি আদালত, আৰক্ষীৰ তদন্ত অথবা প্ৰশাসনিক প্ৰক্ৰিয়াৰ আগতেই যেন ছ'চিয়েল মিডিয়াৰ 'আদালত'ত হ'বলৈ আৰম্ভ কৰে।

স্বীকাৰ কৰিব লাগিব যে ছ'চিয়েল মিডিয়াই তথ্যৰ প্ৰচাৰ-প্ৰসাৰক অভূতপূৰ্ব গতি প্ৰদান কৰিছে। ইয়াৰ বহু ইতিবাচক দিশ আছে, কিন্তু আন এক দিশো আছে। আজিৰ সময়ত আৱেগ উচটনি দিয়া, আংশিক তথ্যক অতিৰঞ্জিতভাৱে উপস্থাপন কৰা আৰু স্থানীয় বিবাদক বৃহৎ সামাজিক অথবা জাতিগত সংঘাতৰ ৰূপ দিয়াটো আগতকৈ বহুত সহজ হৈ পৰিছে। কিছুমান লোকে অধিক ভিউ, অনুসৰণকাৰী আৰু জনপ্ৰিয়তা লাভৰ প্ৰতিযোগিতাত এনে বিষয়বস্তু প্ৰচাৰ কৰে, যিয়ে সমাজত অবিশ্বাস আৰু উত্তেজনাৰ পৰিৱেশ সৃষ্টি কৰিব পাৰে।

আৰ্য নগৰ ঘটনাত আটাইতকৈ গুৰুত্বপূৰ্ণ তথ্যটো হ'ল যে আৰক্ষীয়ে ধাৰাবাহিকভাৱে কৈ আহিছে যে এতিয়ালৈকে এনে কোনো ভিডিঅ', অডিঅ' অথবা আন প্ৰমাণ পোৱা হোৱা নাই, যাৰ ভিত্তিত ঘটনাস্থলীত "অসমীয়া গো বেক" অথবা অসমীয়া সমাজৰ বিৰুদ্ধে আন কোনো শ্ল'গান দিয়া হৈছিল বুলি প্ৰমাণ কৰিব পাৰি। স্বাভাৱিকভাৱেই, যিকোনো দায়িত্বশীল সমাজত আৰক্ষীৰ তদন্তৰ ফলাফললৈ অপেক্ষা কৰা উচিত আছিল। দুৰ্ভাগ্যজনকভাৱে সেয়া নহ'ল। কেইবাটাও জাতীয়তাবাদী সংগঠন আৰু কিছু স্বঘোষিত সমাজকৰ্মীয়ে তদন্ত সম্পূৰ্ণ হোৱাৰ আগতেই ময়দানত নামি এনে বক্তব্য আগবঢ়াবলৈ আৰম্ভ কৰিলে, যাৰ ফলত সামাজিক উত্তেজনা বৃদ্ধি পোৱাৰ আশংকা দেখা দিলে।

এয়া প্ৰথম ঘটনা নহয়। অতীততো বহু সময়ত স্থানীয় পৰ্যায়ৰ সৰু-সুৰা বিবাদক অসমীয়া-বিৰোধী ৰূপ দিয়াৰ চেষ্টা কৰা হৈছে। প্ৰতিবাৰেই ইয়াৰ ফল সমাজত অপ্ৰয়োজনীয় উত্তেজনা আৰু বিভাজনৰ ৰূপত দেখা গৈছে। আৰ্য নগৰৰ ক্ষেত্ৰতো ঘটনাপ্ৰবাহ একে দিশতেই আগবাঢ়ি যোৱা যেন দেখা গৈছে।

উপলব্ধ তথ্য অনুসৰি, এই সমগ্ৰ বিতৰ্কৰ আৰম্ভণি হৈছিল যেতিয়া জিতেন্দ্ৰ হালৈয়ে এজন ব্যক্তিক কথিতভাৱে ভাং সদৃশ মাদকদ্ৰব্য বিক্ৰী কৰি থকা অৱস্থাত ধৰা বুলি অভিযোগ উঠে। যদি সেয়া সঁচা হয়, তেন্তে সেয়া নিঃসন্দেহে এক গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয়। কিন্তু ইয়াত এটা মৌলিক প্ৰশ্ন উত্থাপন হয়। যদি কোনো নাগৰিকৰ দৃষ্টিগোচৰলৈ কোনো অবৈধ কাৰ্যকলাপ আহে, তেন্তে তেওঁৰ প্ৰথম দায়িত্ব হ'ল আৰক্ষী অথবা সংশ্লিষ্ট প্ৰশাসনিক সংস্থাক অৱগত কৰা। অপৰাধৰ তদন্ত কৰা, ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা আৰু আইন প্ৰয়োগ কৰাটো ৰাষ্ট্ৰীয় সংস্থাসমূহৰ কাম। নাগৰিকৰ দায়িত্ব হ'ল তেওঁলোকক প্ৰয়োজনীয় সহযোগিতা আগবঢ়োৱা।

সমস্যাৰ সৃষ্টি তেতিয়া হয়, যেতিয়া কোনো ব্যক্তিয়ে আইন প্ৰয়োগকাৰী সংস্থাৰ ভূমিকা নিজেই পালন কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে। কথিত 'ম'ৰেল পুলিচিং' অথবা কেমেৰাৰ সন্মুখত অপৰাধ ধৰা পৰাৰ প্ৰদৰ্শনে বহু সময়ত পৰিস্থিতিক অধিক জটিল কৰি তোলে। ইয়াৰ ফলত আইন-শৃংখলাৰ অৱস্থা অৱনতি ঘটিব পাৰে আৰু জনতাৰ শাসনক উৎসাহিত কৰিব পাৰে। এনে অনুভৱ হয় যে ছ'চিয়েল মিডিয়াৰ এই যুগত অধিক আৰু সোনকালে ভিউ আৰু অনুসৰণকাৰী লাভ কৰাৰ প্ৰৱণতাই বহু লোকক এই মৌলিক নীতিৰ পৰা আঁতৰাই নিছে।

উপলব্ধ ভিডিঅ' ফুটেজ অনুসৰি, ঘটনাস্থলীত উপস্থিত লোকসকলে জিতেন্দ্ৰ হালৈক ধাৰাবাহিকভাৱে বিভিন্ন প্ৰশ্ন সুধি আছিল। বিতৰ্কৰ কেন্দ্ৰবিন্দু আছিল তেওঁৰ আচৰণ আৰু কাৰ্যকলাপ। প্ৰশ্নসমূহ তীব্ৰ হৈ অহাৰ লগে লগে তেওঁ যুক্তিৰ মাটিত দুৰ্বল হৈ পৰা যেন দেখা গৈছিল। এই সময়তে সমগ্ৰ বিতৰ্কক কথিত 'অসমীয়া গো বেক' শ্ল'গানৰ সৈতে জড়িত কৰা হয় আৰু নিমিষতে আলোচনাৰ মূল বিষয়বস্তু সলনি হৈ যায়। ছ'চিয়েল মিডিয়াৰ যুগত এইটো এক পৰিচিত কৌশলত পৰিণত হৈছে-মূল প্ৰশ্নৰ পৰা দৃষ্টি আঁতৰাই বিতৰ্কক আৱেগিক আৰু জাতিগত দিশলৈ লৈ যোৱা।

শেহতীয়া সময়ছোৱাত জিতেন্দ্ৰ হালৈয়ে ছ'চিয়েল মিডিয়াত প্ৰচাৰ কৰা বিষয়বস্তুসমূহ পৰ্যবেক্ষণ কৰিলেও বহু প্ৰশ্ন উত্থাপিত হয়। তেওঁৰ ফেচবুক পৃষ্ঠাত উপলব্ধ ভিডিঅ' আৰু ৰীলসমূহত ফেন্সী বজাৰৰ এম.এম. ৰোড অঞ্চলত পথৰ কাষত ফল বিক্ৰী কৰা ব্যৱসায়ীসকলক 'বহিৰাগত', 'অনা-অসমীয়া' আৰু 'বিহাৰী' বুলি সম্বোধন কৰা দেখা যায়। অথচ একে অঞ্চলতে অলপ দূৰত পথৰ ওপৰতে এটা ডাঙৰ শাক-পাচলিৰ বজাৰো চলি আছে, যাক হিন্দীভাষী বিহাৰীসকলে পৰিচালনা নকৰে। একেদৰে কুমাৰপাৰা আদি অঞ্চলত নিৰ্মাণ কৰা তেওঁৰ আন ভিডিঅ'বোৰো বিতৰ্কৰ বিষয় হৈ পৰিছে। এই ভিডিঅ'বোৰ চাই এনে ধাৰণা জন্মে যে তেওঁৰ উদ্দেশ্য কেৱল অবৈধ কাৰ্যকলাপৰ বিৰুদ্ধে মাত মাতি থকা নহয়, বৰঞ্চ ইয়াক এক বিশেষ জাতিগত আৰু ভাষিক আলোচনাৰ সৈতে সংযোগ কৰা।

আন এক লক্ষণীয় বিষয় হ'ল, এই সক্ৰিয়তা সাধাৰণতে সেই অঞ্চলসমূহতেই সীমাবদ্ধ যেন দেখা যায়, য'ত প্ৰতিবাদ তুলনামূলকভাৱে কম। হাটীগাঁও, ইছলামপুৰ, ধীৰেণপাৰা অথবা আন সংবেদনশীল সংখ্যালঘু অধ্যুষিত অঞ্চলসমূহত এনে 'ম'ৰেল পুলিচিং' সচৰাচৰ দেখা নাযায়। ইয়াৰ ফলত স্বাভাৱিকভাৱেই এই প্ৰশ্ন উত্থাপিত হয় যে প্ৰকৃত উদ্দেশ্য আইন মানি চলা নিশ্চিত কৰা নে নিৰ্দিষ্ট সম্প্ৰদায়ক লক্ষ্য কৰি এক বিশেষ ৰাজনৈতিক আৰু সামাজিক বাৰ্তা প্ৰেৰণ কৰা।

এই সমগ্ৰ ঘটনাৰ আন এক উদ্বেগজনক দিশ হ'ল যে ঘটনাৰ সৈতে জড়িত অভিযুক্ত অথবা সন্দেহভাজন ব্যক্তিৰ জাতি, সম্প্ৰদায় আৰু সামাজিক পৰিচয় বাৰে বাৰে উল্লেখ কৰা হৈছে। কোনো অপৰাধৰ মূল্যায়ন অপৰাধীৰ জাতি, ভাষা বা সম্প্ৰদায়ৰ ভিত্তিত হ'ব নালাগে। অপৰাধ মানে অপৰাধ, আৰু ইয়াৰ দায়িত্ব ব্যক্তিগত। এজন ব্যক্তিৰ কৃত্যৰ বাবে সমগ্ৰ সমাজক দোষাৰোপ কৰা অথবা তেওঁলোকৰ প্ৰতি পূৰ্বাগ্ৰহ সৃষ্টি কৰাটো সামাজিক সম্প্ৰীতি আৰু গণতান্ত্ৰিক মূল্যবোধ দুয়োটাৰে বাবেই ক্ষতিকাৰক। আজি যদি কোনো এটা সম্প্ৰদায়ক এজন ব্যক্তিৰ অপৰাধৰ বাবে দোষী সাব্যস্ত কৰা হয়, কাইলৈ একে যুক্তি আন এটা সম্প্ৰদায়ৰ বিৰুদ্ধেও ব্যৱহাৰ হ'ব পাৰে।

এই ঘটনাক বিস্তৃত ৰাজনৈতিক প্ৰেক্ষাপটতো চোৱাৰ প্ৰয়োজন আছে। অসমৰ ৰাজনীতিত বিগত কেইবছৰত যি পৰিৱৰ্তন ঘটিছে, সেয়া সেই শক্তিসমূহৰ বাবে অস্বস্তিকৰ হৈ পৰিছে, যিসকলৰ ৰাজনীতি বহুদিন ধৰি উগ্ৰ জাতিগত অনুভূতি আৰু বহিৰাগত-বিৰোধী বৰ্ণনাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল আছিল। বিগত বিধানসভা নিৰ্বাচনত ভাৰতীয় জনতা পাৰ্টীয়ে লাভ কৰা ব্যাপক জনসমৰ্থন আৰু ধাৰাবাহিক নিৰ্বাচনী সফলতাৰ পাছত ৰাজ্যৰ ৰাজনৈতিক শক্তিৰ সমীকৰণ সলনি হৈছে। এনে অনুভৱ হয় যে অসমত কিছুমান শক্তিয়ে ৰাষ্ট্ৰবাদী ৰাজনীতি আৰু ইয়াৰ বাঢ়ি অহা প্ৰভাৱ সহজভাৱে ল'ব পৰা নাই। সেইবাবেই সময়ে সময়ে বিহাৰী, মাৰোৱাৰী আৰু অন্যান্য হিন্দীভাষী সম্প্ৰদায়ক 'বহিৰাগত' অথবা 'অনা-অসমীয়া' বুলি অভিহিত কৰি বিতৰ্ক উচটনি দিয়াৰ চেষ্টা দেখা যায়। তেওঁলোকৰ লক্ষ্য সাধাৰণতে সেই সম্প্ৰদায়সমূহ, যিসকলে দশক ধৰি অসমৰ অৰ্থনীতি, ব্যৱসায়, শিক্ষা আৰু সামাজিক জীৱনৰ অবিচ্ছেদ্য অংশ হিচাপে অৱদান আগবঢ়াই আহিছে।

এই ক্ষেত্ৰত সংবাদ মাধ্যমৰ ভূমিকাও অত্যন্ত গুৰুত্বপূৰ্ণ। যিকোনো সংবেদনশীল ঘটনাৰ প্ৰতিবেদন প্ৰস্তুত কৰাৰ সময়ত তথ্য আৰু আৱেগৰ মাজত ভাৰসাম্য ৰক্ষা কৰাটো সাংবাদিকতাৰ মূল দায়িত্ব। আৰক্ষীৰ তদন্ত সম্পূৰ্ণ হোৱাৰ আগতেই সিদ্ধান্তত উপনীত হোৱা অথবা অপ্ৰমাণিত দাবীক সত্যৰূপে উপস্থাপন কৰাটো সমাজৰ স্বাৰ্থত নহয়। একে দায়িত্ব নিজকে ছ'চিয়েল মিডিয়া ইনফ্লুৱেঞ্চাৰ বুলি কোৱা ব্যক্তিসকলৰ ওপৰতো প্ৰযোজ্য। মত প্ৰকাশৰ স্বাধীনতা গণতন্ত্ৰৰ শক্তি, কিন্তু ইয়াৰ সৈতে সামাজিক দায়বদ্ধতাও জড়িত।

অসমৰ শক্তি ইয়াৰ বৈচিত্ৰ্যত নিহিত। ইয়াত অসমীয়া, মাৰোৱাৰী, বিহাৰী, বাঙালী, নেপালী, চাহ জনজাতি, আদিবাসী আৰু বহু আন সম্প্ৰদায়ে একেলগে আধুনিক অসম গঢ়ি তুলিছে। কোনো স্থানীয় বিবাদক জাতিগত সংঘাতৰ ৰূপ দিয়া, এজন ব্যক্তিৰ কৃত্যৰ বাবে সমগ্ৰ সম্প্ৰদায়ক দোষাৰোপ কৰা অথবা প্ৰমাণ অবিহনে আৱেগ উচটনি দিয়াটো ৰাজ্যৰ স্বাৰ্থত নহয়।

আৰ্য নগৰৰ ঘটনাৰ পৰা লাভ কৰিবলগীয়া আটাইতকৈ ডাঙৰ শিক্ষা এয়াই যে আইনৰ স্থান কেৱল আইনে ল'ব পাৰে-না ছ'চিয়েল মিডিয়াই, না জনতাৰ ভিৰে। অসমৰ সামাজিক সম্প্ৰীতি আৰু শান্তি ৰক্ষা কৰাটো কেৱল তথ্য, সংযম আৰু সাংবিধানিক প্ৰক্ৰিয়াৰ প্ৰতি সন্মানৰ জৰিয়তেই সম্ভৱ।

মণিপুৰত শান্তি পুনঃপ্ৰতিষ্ঠাৰ বাবে কঠোৰ কৌশল

অস্ত্ৰধাৰী গোট আৰু অশান্তি সৃষ্টিকাৰী শক্তিৰ বিৰুদ্ধে নিৰ্ণায়ক ব্যৱস্থাৰ প্ৰস্তুতি

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

দীৰ্ঘদিন ধৰি অশান্তি আৰু হিংসাত্মক ঘটনাৰ সন্মুখীন হৈ থকা মণিপুৰত স্বাভাৱিক পৰিস্থিতি ঘূৰাই আনিবলৈ কেন্দ্ৰীয় গৃহ মন্ত্ৰালয়ে নতুন সুৰক্ষা কৌশল প্ৰস্তুত কৰিছে। এই নতুন পৰিকল্পনাৰ অধীনত ৰাজ্যখনত সক্ৰিয় অস্ত্ৰধাৰী গোট, উগ্ৰপন্থী উপাদান আৰু অশান্তি সৃষ্টিকাৰী শক্তিৰ বিৰুদ্ধে অধিক কঠোৰ আৰু সমন্বিত অভিযান চলোৱা হ'ব।

এইউদ্দেশ্যে কেন্দ্ৰীয় সংৰক্ষিত আৰক্ষী বাহিনীৰ শচচিআৰপিএফ সঞ্চালক প্ৰধান জি. পি. সিঙে মণিপুৰত নিয়োজিত উচ্চপদস্থ বিষয়া আৰু জোৱানসকলৰ সৈতে এক গুৰুত্বপূৰ্ণ বৈঠক অনুষ্ঠিত কৰি সামগ্ৰিক সুৰক্ষা ব্যৱস্থাৰ পৰ্যালোচনা কৰে।

সুৰক্ষা বাহিনীক স্পষ্ট নিৰ্দেশ

বৈঠকত জি. পি. সিঙে কয় যে আইন-শৃংখলা বজাই ৰখা আৰু সাধাৰণ নাগৰিকৰ সুৰক্ষা নিশ্চিত কৰাটো সুৰক্ষা বাহিনীৰ প্ৰধান দায়িত্ব। তেওঁ সকলো বিষয়াক আইনী বিধি আৰু নিৰ্ধাৰিত প্ৰক্ৰিয়াৰ ভিতৰত থাকি দৃঢ়তাৰে দায়িত্ব পালন কৰিবলৈ আহ্বান জনায়।

তেওঁ লগতে আশ্বাস দিয়ে যে কৰ্তব্য পালনৰ সময়ত নিয়ম অনুসৰি গ্ৰহণ কৰা যিকোনো ব্যৱস্থাত কেন্দ্ৰীয় বাহিনীৰ জোৱানসকলৰ সম্পূৰ্ণ সমৰ্থন থাকিব। মণিপুৰত স্থায়ী শান্তি আৰু স্বাভাৱিক পৰিস্থিতি ঘূৰাই অনাটোৱেই চৰকাৰৰ মূল লক্ষ্য বুলি তেওঁ উল্লেখ কৰে।

দুটা ডাঙৰ প্ৰত্যাহ্বান

চিআৰপিএফৰ সঞ্চালক প্ৰধানগৰাকীয়ে কয় যে বৰ্তমান মণিপুৰত সুৰক্ষা সংস্থাসমূহে দুটা গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰত্যাহ্বানৰ সন্মুখীন হৈছে।

প্ৰথম প্ৰত্যাহ্বান হৈছে অস্ত্ৰধাৰী উগ্ৰপন্থী গোট আৰু অবৈধ অস্ত্ৰ ব্যৱহাৰ কৰা উপাদানসমূহ।

দ্বিতীয় প্ৰত্যাহ্বান হৈছে আইন-শৃংখলা বিঘ্নিত কৰা বিভিন্ন কাৰ্যকলাপ আৰু অশান্তি সৃষ্টিত সহায় কৰা গোপন নেটৱৰ্কসমূহ।

তেওঁ কয় যে এই দুয়োটা ক্ষেত্ৰত সুৰক্ষা বাহিনীয়ে কৌশলগত আৰু সমন্বিতভাৱে কাম কৰিব লাগিব, যাতে হিংসাত্মক ঘটনা ৰোধ কৰাৰ লগতে জনসাধাৰণৰ মাজত সুৰক্ষাৰ অনুভূতি পুনৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰিব পৰা যায়।

গোপন তথ্য সংগ্ৰহ আৰু নজৰদাৰীত গুৰুত্ব

জি. পি. সিঙে বিষয়া সকলক সম্ভাব্য পৰিস্থিতিৰ পূৰ্বানুমান কৰি আগতীয়াকৈ ব্যৱস্থা গ্ৰহণৰ নিৰ্দেশ দিয়ে। তেওঁৰ মতে, সুৰক্ষা বাহিনীয়ে কেৱল বৰ্তমানৰ পৰিস্থিতিৰ ওপৰত নজৰ ৰাখিলেই নহ'ব সম্ভাৱ্য ঘটনাৱলীৰ ওপৰতো সততে লক্ষ্য ৰাখিব লাগিব। কেন্দ্ৰ আৰু ৰাজ্যৰ সুৰক্ষা সংস্থাসমূহে ইতিমধ্যে সংবেদনশীল অঞ্চলসমূহত নজৰদাৰী বৃদ্ধি কৰিছে। গোপন তথ্য সংগ্ৰহ ব্যৱস্থা অধিক শক্তিশালী কৰাৰ লগতে সমন্বিত অভিযান চলোৱাৰ ওপৰতো বিশেষ গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হৈছে।

হাতী 'ৰমন'ক পুনৰ্বাসন কেন্দ্ৰলৈ পঠোৱাৰ নিৰ্দেশ উচ্চতম ন্যায়ালয়ৰ

নতুন দিল্লী। অবলা জীৱ-জন্তুৰ কল্যাণক সৰ্বোচ্চ অগ্ৰাধিকাৰ দি উচ্চতম ন্যায়ালয়ে কেৰালাৰ বিখ্যাত হাতী 'ৰমন'ক ৰাজ্য চৰকাৰৰ জিম্মালৈ লৈ উপযুক্ত পুনৰ্বাসন কেন্দ্ৰত ৰখাৰ নিৰ্দেশ দিছে। বিচাৰপতি দীপাংকৰ দত্ত আৰু সতীশ চন্দ্ৰ শৰ্মাৰ খণ্ডপীঠে মন্তব্য কৰে যে বেজুবান জীৱ-জন্তুৰ কল্যাণৰ ক্ষেত্ৰত আদালতে মুকদৰ্শক হৈ থাকিব নোৱাৰে। আদালতে লক্ষ্য কৰে যে কেৰালাৰ সৰ্বোচ্চ উচ্চতাৰ হাতী হিচাপে পৰিচিত 'ৰমন'ক (উচ্চতা ১০.৫৩ ফুট) আদালতৰ পূৰ্বৰ নিষেধাজ্ঞা সত্ত্বেও বাণিজ্যিক আৰু ধৰ্মীয় কাৰ্যসূচীত ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। খণ্ডপীঠে কয়, আদালতৰ সন্মুখত দিয়া আশ্বাসৰ ভিত্তিত হাতীটোৰ বাণিজ্যিক ব্যৱহাৰত নিষেধাজ্ঞা আৰোপ কৰা হৈছিল। কিন্তু সেই নিৰ্দেশ উলংঘা কৰি হাতীটোক বিভিন্ন অনুষ্ঠান আৰু শোভাযাত্ৰাত ব্যৱহাৰ কৰাটো দুৰ্ভাগ্যজনক। আদালতে স্পষ্ট কৰি দিয়ে যে জীৱ-জন্তুৰ অধিকাৰ আৰু কল্যাণৰ ক্ষেত্ৰত কোনো ধৰণৰ অৱহেলা সহ্য কৰা নহ'ব। সেয়েহে হাতী 'ৰমন'ৰ সুৰক্ষা, স্বাস্থ্য আৰু কল্যাণ নিশ্চিত কৰিবলৈ ৰাজ্য চৰকাৰক ইয়াক উপযুক্ত পুনৰ্বাসন কেন্দ্ৰত স্থানান্তৰ কৰাৰ নিৰ্দেশ দিয়া হৈছে।

ওমান উপকূলত জাহাজত আক্ৰমণ

২৪ ভাৰতীয় নাবিকৰ মাজত ২১ জন উদ্ধাৰ, আমেৰিকাক আপত্তিপত্ৰ

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

ওমান উপকূলৰ ওচৰত এক বাণিজ্যিক জাহাজত সংঘটিত আক্ৰমণক লৈ ভাৰত চৰকাৰে তীব্ৰ প্ৰতিক্ৰিয়া প্ৰকাশ কৰিছে। জাহাজখনত ২৪ জন ভাৰতীয় নাবিক আছিল। ইয়াৰে ২১ জনক উদ্ধাৰ কৰা হৈছে যদিও তিনিজন এতিয়াও সন্ধানহীন হৈ আছে।

বিদেশ মন্ত্ৰালয়ে ঘটনাটোক কঠোৰ ভাষাৰে গৰিহণা দি কয় যে মধ্যপ্ৰাচ্যত বৰ্ধিত উত্তেজনাৰ ফলস্বৰূপে আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় জলপথত বাণিজ্যিক জাহাজসমূহ লক্ষ্য কৰি লোৱা ঘটনা গভীৰভাৱে উদ্বেগজনক। ভাৰতে অঞ্চলটোত উত্তেজনা হ্ৰাস আৰু কূটনৈতিক আলোচনাৰ জৰিয়তে শান্তিপূৰ্ণ সমাধানৰ আহ্বান জনাইছে।

ঘটনাৰ প্ৰতিবাদত নতুন দিল্লীয়ে আমেৰিকাৰ কাৰ্যবাহী ৰাজদূত জেছন মীকছক তলব কৰাৰ লগতে এক আনুষ্ঠানিক আপত্তিপত্ৰ প্ৰদান কৰে। বিদেশ মন্ত্ৰালয়ে স্পষ্টভাৱে উল্লেখ কৰে যে বাণিজ্যিক জাহাজ আৰু অসামৰিক আন্তঃগাঁথনিৰ ওপৰত আক্ৰমণ বন্ধ হ'ব লাগিব আৰু আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় আইন অনুসৰি বিশ্ব বাণিজ্যৰ বাবে গুৰুত্বপূৰ্ণ জলপথসমূহত অবাধ নৌ-চলাচল পুনৰ স্বাভাৱিক কৰিব লাগিব।

ইফালে, ওমানস্থিত ভাৰতীয় দূতাবাসে স্থানীয় কৰ্তৃপক্ষৰ সৈতে সমন্বয় ৰক্ষা কৰি উদ্ধাৰ আৰু অনুসন্ধান অভিযানৰ ওপৰত নিবিড় নজৰ ৰাখিছে। মধ্যপ্ৰাচ্যত চলি থকা সংঘাতৰ মাজতে এই ঘটনাই সামুদ্ৰিক সুৰক্ষা আৰু আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় বাণিজ্যক লৈ নতুন উদ্বেগৰ সৃষ্টি কৰিছে।

ইণ্ডিয়া মিত্ৰজোঁটত অসন্তোষৰ বিস্ফোৰণ

জন জন বিচাৰ
...নতুন দিল্লী

নিৰ্বাচনৰ পিছত ইণ্ডিয়া মিত্ৰজোঁটৰ অনুষ্ঠিত গুৰুত্বপূৰ্ণ বৈঠকত বিৰোধী ঐক্যৰ অন্তৰালত লুকাই থকা মতভেদ আৰু অসন্তোষ স্পষ্টভাৱে পোহৰলৈ আহিল। বৈঠকত একাধিক আঞ্চলিক দল, বাওঁপন্থী শক্তি আৰু সহযোগী দলৰ নেতাই কংগ্ৰেছৰ কাৰ্যপদ্ধতি, নিৰ্বাচনী ৰণকৌশল আৰু পাৰস্পৰিক সমন্বয়ৰ অভাৱক লৈ অসন্তুষ্টি ব্যক্ত কৰে।

সমাজবাদী পাৰ্টীৰ সভাপতি অখিলেশ যাদৱে কয় যে ৰাজ্যিক ৰাজনীতিৰ বাস্তৱ পৰিস্থিতি বুজি সিদ্ধান্তগ্ৰহণ কৰাটো অত্যন্ত জৰুৰী। তেওঁ আঞ্চলিক দলসমূহৰ মতামতক অধিক গুৰুত্ব দিয়াৰ আহ্বান জনায়। বিহাৰৰ নেতা তেজস্বী যাদৱেও আসন বণ্টন, প্ৰাৰ্থী নিৰ্বাচন আৰু মিত্ৰদলসমূহৰ মাজত যোগাযোগৰ অভাৱৰ অভিযোগ উত্থাপন কৰে। বাওঁপন্থী নেতাসকলে স্পষ্টভাৱে উল্লেখ কৰে যে ইণ্ডিয়া মিত্ৰজোঁট কোনো একক দলৰ আধিপত্যৰ ক্ষেত্ৰ নহয়; ই সমমৰ্যাদা আৰু পাৰস্পৰিক আস্থাৰ ভিত্তিত গঢ় লৈ উঠা এক ৰাজনৈতিক ঐক্য। তেওঁলোকে কোনো সহযোগী দলৰ ধৰ্মনিৰপেক্ষ ভাবমূৰ্তিক প্ৰশ্নবিদ্ধ নকৰিবলৈও আহ্বান জনায়। পশ্চিমবংগৰ মুখ্যমন্ত্ৰী মমতা বেনাৰ্জীয়ে মিত্ৰজোঁটৰ ভিতৰত অধিক সমন্বয়, নিয়মীয়া আলোচনা আৰু জনসাধাৰণৰ সৈতে প্ৰত্যক্ষ সংযোগ স্থাপনৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰে। তেওঁ কয়, 'আমাৰ মাজৰ মতভেদ ৰাজহুৱাভাৱে প্ৰকাশ কৰাৰ পৰিবৰ্তে জনতাৰ সমস্যা লৈ একেলগে সংগ্ৰাম কৰিব লাগিব।'

শিৱসেনা শচউদ্ধৱ গোটগ্ন-ৰ নেতা উদ্ধৱ ঠাকৰে আৰু ঝাৰখণ্ডৰ মুখ্যমন্ত্ৰী হেমন্ত সোৰেণেও মিত্ৰজোঁটৰ বাবে এজন স্থায়ী সমন্বয়কৰ্তা নিয়োগৰ প্ৰস্তাৱ আগবঢ়ায়। তেওঁলোকৰ মতে, স্পষ্ট নেতৃত্ব আৰু সুনিৰ্দিষ্ট যোগাযোগ ব্যৱস্থাৰ অভাৱত বহু ক্ষেত্ৰত বিভ্ৰান্তিৰ সৃষ্টি হৈছে।

বৈঠকৰ শেষত ৰাহুল গান্ধীয়ে অংশীদাৰ দলসমূহে উত্থাপন কৰা উদ্বেগ আৰু অভিযোগসমূহ কংগ্ৰেছে গুৰুত্বসহকাৰে বিবেচনা কৰিব বুলি আশ্বাস দিয়ে। কিন্তু বৈঠকৰ সামগ্ৰিক চিত্ৰই এটা কথাই স্পষ্ট কৰিলে-বিজেপিৰ বিৰুদ্ধে সংগ্ৰামত নামাৰ পূৰ্বে ইণ্ডিয়া মিত্ৰজোঁটক নিজৰ অন্তৰ্দ্বন্দ্ব আৰু অসন্তোষ দূৰ কৰিব লাগিব।

‘হোমৱৰ্ক’ : হেৰাই যোৱা শৈশৱৰ এখন দৰ্পণ

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

এজন শিশু। মে’মাহৰ গধূলি। খিৰিকীৰে সোমাই অহা ৰ’দ। বাহিৰত সমনীয়াসকলৰ খেল-ধেমালি। কিন্তু সি বহি আছে টেবুলৰ সন্মুখত। আগত হোমৱৰ্কৰ পাহাৰ, তাৰ পিছত টিউচন, নিশা পুনৰ পঢ়া। শিশুটোৰ বাবে জীৱন যেন এক অন্তহীন দৌৰ।

এই দৃশ্য কেৱল চলচ্চিত্ৰৰ কাহিনী নহয়; ই আজিৰ ভাৰতৰ লক্ষ লক্ষ শিশুৰ বাস্তৱতা। এই বাস্তৱতাকেই সংবেদনশীলভাৱে পৰ্দাত তুলি ধৰিছে পৰিচালক অচিন্ত্যজ্ঞয় শংকৰৰ নতুন অসমীয়া চলচ্চিত্ৰ ‘হোমৱৰ্ক’-এ।

সম্প্ৰতি মুক্তি লাভ কৰা এই চলচ্চিত্ৰই কেৱল বিনোদনেই প্ৰদান কৰা নাই; বৰং আধুনিক সমাজত শিশুসকলে সন্মুখীন হোৱা মানসিক চাপ, শিক্ষাৰ প্ৰতিযোগিতা আৰু হেৰাই যোৱা শৈশৱৰ বিষয়ে এক গভীৰ আলোচনা আৰম্ভ কৰিছে।

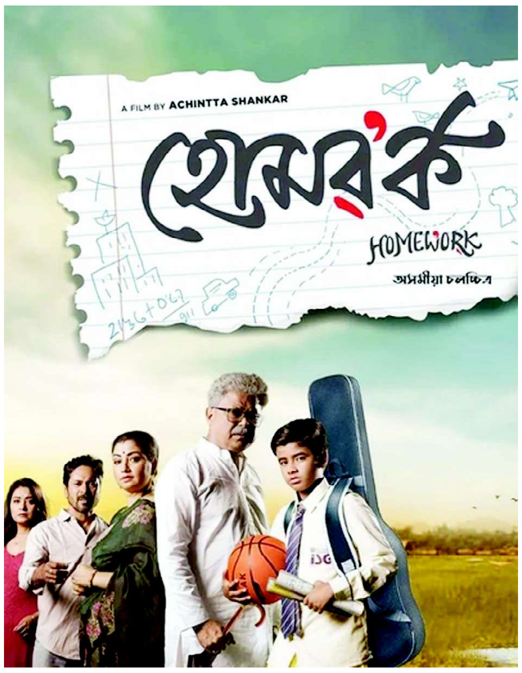

অপুৰ চকুত দেখা শৈশৱৰ পৃথিৱী

চলচ্চিত্ৰখনৰ কেন্দ্ৰীয় চৰিত্ৰ অপু। চহৰীয়া জীৱনৰ নিয়ম-শৃংখলাৰ মাজত বন্দী অপুৰ মন সদায় গাঁৱৰ ককা-আইতাৰ ঘৰলৈ উৰি যায়। তাৰ বাবে গাঁও মানে মুক্তি, সেউজীয়া পথাৰ, বন্ধুবোৰ, ককাতো ভাই-ভনীৰ সৈতে খেল-ধেমালি আৰু সময়ৰ কোনো কঠোৰ নিয়ম নথকা এক পৃথিৱী।

যেতিয়া ককাকে তাক গাঁৱলৈ লৈ যায়, তেতিয়াই আৰম্ভ হয় ছবিখনৰ মূল যাত্ৰা। এই যাত্ৰা কোনো নাটকীয় ঘটনাৰে ভৰা নহয়; বৰং ই শিশুমনৰ স্বাধীনতা আৰু আনন্দৰ এক নীৰৱ অনুসন্ধান।

দৰ্শকে অপুৰ সৈতে হাঁহে, দৌৰে, খেলি ফুৰে আৰু অনুভৱ কৰে- আচলতে শৈশৱ কিমান সৰল আৰু সুন্দৰ হ’ব পাৰে।

অভিভাৱকৰ বাবে এক নীৰৱ সতৰ্কবাণী

চলচ্চিত্ৰখনৰ অন্যতম শক্তিশালী মুহূৰ্ত হৈছে অপুৰ ককাৰ সংলাপ। তেওঁ অপুৰ পিতৃ-মাতৃক কোৱা এক সাধাৰণ বাক্যই সমগ্ৰ ছবিখনৰ মূল বক্তব্য স্পষ্ট কৰে- “ভৱিষ্যতৰ নামত বৰ্তমানক বলি নিদিবা।”

বৰ্তমানৰ সমাজত বহু অভিভাৱকে সন্তানৰ উজ্জ্বল ভৱিষ্যতৰ আশাত বিদ্যালয়, টিউচন, সংগীত, নৃত্য, প্ৰতিযোগিতামূলক পৰীক্ষা আদিৰ এক অন্তহীন চক্ৰত তেওঁলোকক আবদ্ধ কৰি ৰাখে। চলচ্চিত্ৰখনে এই মানসিকতাক কঠোৰভাৱে সমালোচনা নকৰে। বৰং কোমলভাৱে প্ৰশ্ন তোলে-এই সকলো ব্যৱস্থাৰ মাজত শিশুটোৰ শৈশৱ ক’ত হেৰাই গৈছে?

অচিন্ত্য শংকৰৰ পৰিণত সৃষ্টিশীলতা

অসমীয়া চলচ্চিত্ৰ জগতত অচিন্ত্য শংকৰে ইতিমধ্যে এক স্বতন্ত্ৰ পৰিচয় গঢ়ি তুলিবলৈ সক্ষম হৈছে। ‘প্ৰতিঘাত’, ‘দূৰ’, ‘প্ৰিয়াৰ প্ৰিয়’, ‘কাঞ্চনজঙ্ঘা’ আদি চলচ্চিত্ৰৰ জৰিয়তে তেওঁ সংযমী অথচ হৃদয়স্পৰ্শী কাহিনী কোৱাৰ দক্ষতা প্ৰদৰ্শন কৰিছে।

‘হোমৱৰ্ক’ক তেওঁৰ সৃষ্টিশীল যাত্ৰাৰ এক পৰিণত অধ্যায় বুলি ক’ব পাৰি। এই ছবিখনে কেৱল কাহিনী কোৱা নাই, বৰং আমাৰ সময়ৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ সামাজিক সংকটক শিল্পৰ ভাষাত প্ৰকাশ কৰিছে।

শিশুশিল্পীৰ অনবদ্য অভিনয়

অপুৰ চৰিত্ৰত অভিনয় কৰা সূৰ্যাং জিউ মাৰ্ঘেৰিটাই ছবিখনৰ প্ৰাণ। তেওঁৰ অভিনয়ত কৃত্ৰিমতাৰ কোনো চিন দেখা নাযায়। তেওঁ যেন অভিনয় কৰা নাই, বাস্তৱ জীৱনৰ এক শিশুকেই পৰ্দাত দেখা গৈছে।

আনহাতে অপুৰ মাতৃৰ চৰিত্ৰত অভিনয় কৰিছে গায়ত্ৰী মহন্তই। বহুদিনৰ অন্তত অসমীয়া চলচ্চিত্ৰলৈ তেওঁৰ প্ৰত্যাৱৰ্তন দৰ্শকৰ বাবে এক সুখবৰ। আকৰ্ষণীয় কথা হ’ল-বাস্তৱ জীৱনতো সূৰ্যাং আৰু গায়ত্ৰী মা-ল’ৰা। ফলত তেওঁলোকৰ মাজৰ সম্পৰ্ক আৰু আবেগ পৰ্দাত স্বাভাৱিকভাৱে প্ৰতিফলিত হৈছে।

আজিৰ শিক্ষাব্যৱস্থাৰ এক নীৰৱ সমালোচনা

‘হোমৱৰ্ক’ৰ অন্যতম ডাঙৰ কৃতিত্ব হ’ল, ই আধুনিক শিক্ষাব্যৱস্থাৰ সমস্যাসমূহক শিশুৰ দৃষ্টিকোণৰ পৰা চাবলৈ চেষ্টা কৰিছে। আজিৰ শিশু বিদ্যালয়, টিউচন, অনলাইন ক্লাছ আৰু প্ৰতিযোগিতাৰ মাজত এনে এক জীৱন যাপন কৰিছে, য’ত খেল-ধেমালি, কৌতূহল আৰু সৃষ্টিশীলতাৰ স্থান ক্ৰমে সংকুচিত হৈ আহিছে। আধুনিক শৈশৱৰ এই সংকটক কেন্দ্ৰ কৰি নিৰ্মিত চলচ্চিত্ৰ ‘হোমৱৰ্ক’ এক ব্যতিক্ৰমী প্ৰয়াস।

গৰমত খাদ্য বিষক্ৰিয়াৰ ভয়

জন জন বিচাৰ
...✍ নতুন দিল্লী

গ্ৰীষ্মকাল আহিলেই বৃদ্ধি পায় তাপমাত্ৰা। লগে লগে বৃদ্ধি পায় আন এক নীৰৱ স্বাস্থ্য-সংকট-খাদ্য বিষক্ৰিয়া। বহুতে গৰমৰ দিনত পেটৰ বিষ, বমি, ডায়েৰিয়া, দুৰ্বলতা বা জ্বৰৰ দৰে সমস্যাক সাধাৰণ বুলিয়েই গণ্য কৰে। কিন্তু চিকিৎসকসকলৰ মতে, এই লক্ষণসমূহৰ আঁৰত বহু সময়ত লুকাই থাকে খাদ্য বিষক্ৰিয়াৰ সমস্যা।

বিশেষকৈ শিশু, বৃদ্ধ আৰু ৰোগপ্ৰতিৰোধ ক্ষমতা কম থকা লোকসকলৰ বাবে এই সমস্যা বিপজ্জনক ৰূপ ধাৰণ কৰিব পাৰে। সামান্য অসাৱধানতা, পচা খাদ্য বা দূষিত পানীয়ে এজন সুস্থ ব্যক্তিকো অসুস্থ কৰি তুলিব পাৰে।

খাদ্য বিষক্ৰিয়াৰ লক্ষণ ঃ বমি বা বমিভাৱ, ডায়েৰিয়া, পেটৰ বিষ আৰু মূৰ্চা, জ্বৰ, মূৰ ঘূৰোৱা, দুৰ্বলতা আৰু শৰীৰত পানীৰ অভাৱ।

খাদ্য বিষক্ৰিয়াৰ মূল কাৰণসমূহ

দূষিত খাদ্য ঃ খাদ্য বিষক্ৰিয়াৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ কাৰণ হৈছে দূষিত খাদ্য। খাদ্য প্ৰস্তুতকৰণ, পৰিবহণ অথবা সংৰক্ষণৰ সময়ত জীৱাণু সোমাই পৰিব পাৰে।

দূষিত পানী ঃ বিশুদ্ধ নোহোৱা পানী খাদ্য বিষক্ৰিয়াৰ আন এক গুৰুত্বপূৰ্ণ কাৰণ। বিশেষকৈ গ্ৰীষ্মকালত পানীৰ মাধ্যমে বহু জীৱাণু সহজে শৰীৰত প্ৰৱেশ কৰে।

খাদ্য সঠিকভাৱে সংৰক্ষণ নকৰা ঃ অনেকেই ৰন্ধা খাদ্য ঘণ্টাৰ পিছত ঘণ্টা বাহিৰত ৰাখি দিয়ে। গৰমত এই অভ্যাস অত্যন্ত বিপজ্জনক।

আধাসিজা খাদ্য ঃ গাখীৰ ভালদৰে উতলাই নাখালে অথবা আধাসিজা মাংস-মাছ খালে খাদ্য বিষক্ৰিয়াৰ সম্ভাৱনা বৃদ্ধি পায়।

গ্ৰীষ্মকালত স্বাস্থ্য সুৰক্ষাৰ অন্যতম মূলমন্ত্ৰ হৈছে পৰিষ্কাৰ খাদ্য, বিশুদ্ধ পানী আৰু সঠিক সংৰক্ষণ। খাদ্য বিষক্ৰিয়া কোনো ডাঙৰ মহামাৰী নহ’লেও অসাৱধানতাৰ ফলত ই গুৰুতৰ স্বাস্থ্য-সমস্যাৰ সৃষ্টি কৰিব পাৰে। সেয়েহে খাদ্য প্ৰস্তুত আৰু সংৰক্ষণৰ ক্ষেত্ৰত অলপ সজাগতা আৰু সচেতনতাই আপোনাক আৰু আপোনাৰ পৰিয়ালক বহু বিপদৰ পৰা ৰক্ষা কৰিব পাৰে।

নখ সুন্দৰ আৰু শক্তিশালী ৰাখিবলৈ সহজ যত্ন

সুস্থ, পৰিষ্কাৰ আৰু উজ্জ্বল নখ কেৱল সৌন্দৰ্যৰ প্ৰতীক নহয়, ই আমাৰ সামগ্ৰিক স্বাস্থ্যৰো পৰিচয় বহন কৰে। কিন্তু বহু লোকৰ নখ সহজে ভাঙি যায়, পীতবৰ্ণ হয় বা দুৰ্বল হৈ পৰে। বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, সঠিক যত্ন আৰু সুষম খাদ্যৰ জৰিয়তে নখক সুস্থ আৰু শক্তিশালী কৰি ৰাখিব পাৰি।

নখৰ স্বাস্থ্যৰ বাবে প্ৰ’টিন, বায়’টিন, ভিটামিন বি-৭ , লৌহ আৰু ভিটামিনসমৃদ্ধ খাদ্য গ্ৰহণ অতি প্ৰয়োজনীয়। কণী, ডাল, গাখীৰ, বাদাম, ফল-মূল আৰু সেউজীয়া শাক-পাচলি নিয়মিতভাৱে খাদ্যত অন্তৰ্ভুক্ত কৰিব লাগে। লগতে দৈনিক পৰ্যাপ্ত পৰিমাণে পানী পান কৰিলে নখ শুকাই যোৱাৰ সম্ভাৱনা কমে।

নখ নিয়মিতভাৱে পৰিষ্কাৰ কৰি ৰাখিব লাগে আৰু অত্যধিক দীঘল হ’বলৈ দিব নালাগে। ৰাতি শোৱাৰ আগতে

নাৰিকল বা জলফাই তেলেৰে নখত মালিচ কৰিলে নখৰ উজ্জ্বলতা আৰু শক্তি বৃদ্ধি পায়। নেমু আৰু নিমখ মিহলোৱা কুহুমীয়া পানীত কিছু সময় হাত ডুবাই ৰাখিলেও নখ পৰিষ্কাৰ আৰু চকচকীয়া হয়।

নেলপলিচ আৰু ৰাসায়নিক সামগ্ৰীৰ অত্যধিক ব্যৱহাৰ পৰিহাৰ কৰা উচিত।

VOICE OF ALL, FOR ALL
WEEKLY
JAN JAN VICHAR
Guwahati, Friday, 12 June 2026

Nationwide Crackdown on Unregulated Madrasas

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

A growing number of Indian states have launched reviews and regulatory measures aimed at bringing madrasa education under greater administrative security, reigniting a nationwide debate over educational standards, transparency and national integration.

Recent initiatives in West Bengal, Uttarakhand, Bihar and Uttar Pradesh indicate a shift toward stricter monitoring of madrasa institutions. Governments argue that the objective is to ensure compliance with educational norms, financial accountability and child welfare standards while promoting modern education alongside religious instruction.

In West Bengal, authorities have initiated a comprehensive survey of madrasas across the state. District officials have been directed to collect details regarding registration status, establishment records, teaching staff, hostel facilities and curriculum structures. The move is intended to identify institutions operating within legal frameworks and those functioning without proper authorization.

The issue has gained further prominence following reforms in Uttarakhand, where the state government reviewed madrasa operations after implementing the Uniform Civil Code. Officials reported concerns regarding unrecognized institutions, inadequate teaching infrastructure and limited access to modern subjects. The state has subsequently introduced a new regulatory framework for minority educational institutions, emphasizing qualified teachers, transparent financial management and contemporary education.

Bihar has also ordered audits of government-aided madrasas and Sanskrit schools. State authorities maintain that institutions receiving public funds must be accountable and adhere to prescribed educational standards. Meanwhile, administrative action against allegedly unauthorized madrasas in parts of Uttar Pradesh has intensified the national conversation.

Supporters of these measures argue that all educational institutions, regardless of their religious affiliation, should be subject to uniform standards of transparency, safety and academic quality. They contend that students must be equipped with modern skills and scientific knowledge to

Continued on Page 17

Assam Raises DA and DR to 60%

Guwahati: In a significant relief for government employees and pensioners, the Assam Cabinet has approved a 2 per cent increase in Dearness Allowance (DA) and Dearness Relief (DR), raising the rate from 58 per cent to 60 per cent. The revised rates will come into effect from July 2026 and are expected to benefit more than eight lakh serving employees and pensioners across the state.Announcing the decision Assam Chief Minister Dr. Himanta Biswa Sarma said that the state government remains committed to the welfare and financial security of its workforce and retired personnel.Our employees and pensioners are valued partners in Assam's growth story. To further support them, the Assam Cabinet has approved a 2 per cent increase in DA and DR, taking it from 58 per cent to 60 per cent from this July, the Chief Minister stated.The enhancement comes at a time when rising inflation and increasing household

Continued on Page 17

Assam Emerges as India's Rubber Powerhouse

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

Assam is steadily carving out a new identity in India's plantation economy. Long celebrated for its tea gardens, the state is now emerging as a major force in the natural rubber sector, with nearly 50,000 hectares under cultivation and the distinction of being India's third-largest rubber producer after Kerala and Tripura.

The development reflects a broader transformation taking place across the Northeast, where rubber cultivation has expanded rapidly over the past decade. According to officials of the Rubber Board, Assam has become a key contributor to the region's growing share of India's natural rubber production, helping reduce dependence on imports while creating new livelihood opportunities for thousands of farmers.

The success is being driven by a combination of government support, technological innovation and expanding market opportunities. A significant milestone was

Kapil Chaudhary addresses media persons in Guwahati.

achieved with the planting of the world's first genetically modified rubber variety designed specifically for the climatic conditions of the Northeast. Experts believe this breakthrough could substantially improve productivity and farmer incomes in the coming years.

The Rubber Board's INROAD Project has also accelerated plantation expansion, benefiting more than two lakh growers across the Northeast and West Bengal. Industry leaders say the focus is now shifting from merely increasing acreage to enhancing productivity and value addition.

Equally significant are the opportunities emerging from India's Free Trade Agreements, which are opening new international markets for plantation products. With exports becoming a central pillar of economic growth, Assam's rubber sector is well-positioned to capitalize on rising global demand.

For decades, Assam's economy has been synonymous with tea. However, the rise of rubber signals a diversification that could strengthen rural incomes, generate employment and attract fresh investments. As global industries increasingly seek reliable natural rubber supplies,

Continued on Page 17

Shillong Set to Host Northeast's Biggest Infrastructure Summit

Jan Jan Vichar
...✍Shillong

Meghalaya's capital is set to become the focal point of Northeast India's development discourse as it hosts the North East India Infrastructure Summit & Exhibition (NEIINFRA Summit) 2026 on June 15 and 16. The event is expected to bring together more than 800 delegates, including senior government officials, Union ministers, industry leaders, investors and infrastructure experts.

Organised by the Federation of Industry & Commerce of North Eastern Region (FINER) in collaboration with the Government of Meghalaya, the summit aims to create a common platform for policy discussions, investment promotion and regional infrastructure planning.

Union Road Transport and Highways Minister Nitin Gadkari is scheduled to inaugurate the summit, while Meghalaya Chief Minister Conrad K. Sangma will attend as the guest of honour. Representatives from all eight Northeastern states and several key Union ministries are expected to participate.

The summit will focus on critical sectors such as roads and highways, aviation, tourism, digital connectivity, industrial infrastructure, ports and inland waterways. More than eight thematic sessions and a large exhibition showcasing emerging technologies, startups and infrastructure solutions are planned.

Organisers believe the event could serve as a catalyst for attracting investments, strengthening public-private partnerships and accelerating economic growth across the Northeast.

A New Vision for the Northeast

Over the past decade, infrastructure development has emerged as a key driver of growth in the region. Improved highways, airports, digital networks and logistics corridors have enhanced connectivity and opened new economic opportunities.

The Shillong summit is expected to build on this momentum by bringing policymakers and investors together to discuss long-term strategies for sustainable and inclusive development.

For decades, the Northeast's development potential remained constrained by inadequate infrastructure and limited connectivity. Events such as the NEIINFRA Summit reflect a growing recognition that investment in roads, digital networks, tourism and logistics is essential for unlocking the region's economic promise. The challenge now is to translate discussions into tangible projects that create jobs, attract investment and improve the quality of life for millions across the Northeast.

Meghalaya Embraces AI Revolution in Farms and Classrooms

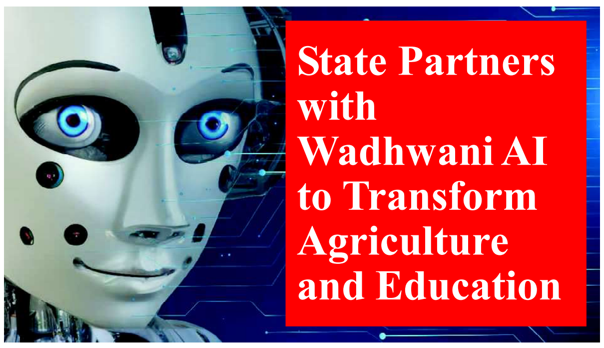

Jan Jan Vichar
...✍Shillong

In a significant step towards technology-driven governance, Meghalaya has partnered with Wadhwani AI to deploy artificial intelligence solutions in agriculture and education, making it one of the pioneering states in the Northeast to integrate advanced digital tools into public service delivery.

The Memorandum of Understanding (MoU), signed on June 10 between the State Council of Science, Technology and Environment (SCSTE) and Wadhwani AI, aims to improve the lives of farmers, teachers and students through data-driven interventions.

Under the initiative, farmers will receive localized advisories, AI-assisted decision-support systems and real-time pest and disease surveillance. Officials believe these tools will help improve crop productivity, reduce losses and strengthen agricultural planning across the state.

In the education sector, Meghalaya plans to introduce an AI-powered Oral Reading Fluency system that will assess students' reading abilities and identify learning gaps at an early stage. The technology is expected to assist teachers and education administrators in designing timely academic interventions.

Beyond these sectors, the partnership will focus on research, skill development and responsible use of emerging technologies. The move reflects Meghalaya's growing ambition to harness artificial intelligence not merely as a technological tool but as a catalyst for inclusive development and better governance.

Tragedy Deepens Manipur's Ethnic Crisis, Six Bodies Recovered

Imphal: In a tragic development that has once again highlighted the fragile security situation in Manipur, the bodies of six persons believed to be among those abducted during recent ethnic violence were recovered on June 10 following an extensive joint search operation by state and central security forces.

The recovery came after nearly 24 hours of intensive searches involving around 450 personnel from the Manipur Police, CRPF and Assam Rifles, supported by forensic experts and sniffer dog units. Authorities have launched an investigation to determine the exact circumstances surrounding the deaths.

The incident is linked to a hostage crisis that emerged after a deadly ambush in Kangpokpi district on May 13, which triggered retaliatory detentions between Naga and Kuki groups. Although several hostages from both communities were released through negotiations, six persons remained unaccounted for until the latest recovery.

The discovery of the bodies has renewed concerns about the continuing ethnic tensions that have plagued Manipur for more than three years. Community leaders and civil society groups have appealed for restraint and justice, while security agencies continue efforts to prevent further escalation.

The tragedy serves as a grim reminder that lasting peace in Manipur can only be achieved through dialogue, reconciliation and the rule of law.

Modi Becomes India's Longest Serving Elected Prime Minister

Surpasses Nehru's Record of Continuous Tenure

Jan Jan Vichar
...New Delhi

Prime Minister Narendra Modi on 10th June created political history by becoming India's longest continuously serving elected Prime Minister, surpassing the record held by the country's first Prime Minister, Jawaharlal Nehru.

With 4,398 uninterrupted days in office since assuming power on May 26, 2014, Modi has now completed the longest continuous tenure ever served by an elected Prime Minister in independent India. The milestone comes after three consecutive electoral victories in 2014, 2019 and 2024, reflecting a decade-long dominance of the Bharatiya Janata Party (BJP) in national politics.

The Union Cabinet marked the occasion by passing a congratulatory resolution and giving the Prime Minister a standing ovation.

President Droupadi Murmu hailed the achievement as a reflection of the people's enduring trust in Modi's leadership, citing progress in governance, economic development and social transformation during his tenure.

International leaders, including heads of government from Malaysia, Nigeria and Kenya, also extended their congratulations, describing Modi's political journey as a remarkable example of democratic leadership and public service.

However, the milestone also triggered a sharp political debate. The Congress party argued that comparisons with Jawaharlal Nehru must take into account the extraordinary challenges of nation-building faced during the early years of Independence. Congress leaders highlighted Nehru's role in shaping democratic institutions, integrating princely states and laying the foundations of modern India.

Political observers note that beyond the numbers, the achievement underscores a significant shift in India's electoral landscape. Modi has emerged as the central figure of Indian politics for more than a decade, reshaping governance, welfare delivery, foreign policy and political communication.

In a country known for its diverse electorate and complex political dynamics, winning three consecutive national mandates is a rare accomplishment. Modi's continued popularity and the BJP's electoral success have made him one of the most influential leaders in contemporary Indian history.

PoJK Boils Under Pressure as Global Rights Bodies Raise Alarm

London/Islamabad: Pakistan-occupied Jammu and Kashmir (PoJK) has come under intense international scrutiny following allegations of widespread restrictions on civil liberties ahead of regional elections. Amnesty International and more than 40 British parliamentarians have reportedly questioned Islamabad's handling of the situation, citing concerns over internet shutdowns, curbs on movement and the suppression of dissent.

The controversy escalated after Pakistani authorities designated the Joint Awami Action Committee (JAAC), a citizens' organisation, as a terrorist outfit following failed negotiations. Human rights advocates have criticised the move as an attempt to silence democratic voices.

Reports of communication blackouts, heavy security deployment and restrictions on public gatherings have further deepened concerns. British lawmakers have urged Pakistan to restore normalcy, safeguard fundamental freedoms and ensure a transparent electoral process.

Continued from Page 15

Nationwide Crackdown on...

compete in an increasingly technology-driven world. However, critics caution against generalizations that portray madrasas as centers of extremism. They emphasize that thousands of madrasas across India provide basic education, religious instruction and social support to economically disadvantaged communities. Minority organizations have called for reforms based on evidence and educational improvement rather than political considerations. The debate has also raised broader questions about balancing religious freedom with educational modernization. Experts suggest that integrating mathematics, science, technology and civic education into madrasa curricula could help bridge gaps while preserving cultural and religious traditions.

As governments continue their reviews, the discussion is likely to remain at the center of India's educational and political landscape. The challenge before policymakers will be to ensure that reforms strengthen educational outcomes, uphold constitutional values and promote social harmony without alienating any community.

Assam Raises DA and DR...

expenses continue to put pressure on family budgets. Officials said the revised allowance is aimed at helping employees and pensioners maintain their purchasing power and cope with the rising cost of living.

Dearness Allowance is provided to serving government employees, while Dearness Relief is extended to pensioners as compensation against inflation. Both are revised periodically based on economic conditions and government policy decisions.

Assam Raises DA and DR...

Assam's plantations may become an important link in international supply chains. The growth of the rubber sector demonstrates how scientific innovation, policy support and market access can transform agriculture into a powerful engine of economic development. Assam's emergence as a rubber hub is not merely a production story; it is a story of rural transformation, entrepreneurship and the state's expanding role in India's growth narrative.

Unity Begins at Home

The recent meeting of the INDIA bloc was expected to project a picture of opposition unity and chart a roadmap for challenging the BJP in the years ahead. Instead, it highlighted the deep divisions and unresolved tensions within the alliance itself.

Several regional partners openly expressed dissatisfaction with the Congress over issues ranging from seat-sharing arrangements to poor coordination and inadequate consultation on key political decisions. Calls for a permanent coordinator and a stronger organisational structure reflected growing concerns about the alliance's functioning.

The backdrop to the meeting was equally significant. Political instability in several opposition parties, particularly the turmoil within the Trinamool Congress, has raised questions about the strength and durability of the opposition camp. Internal dissent, leadership disputes and organisational weaknesses continue to haunt many parties that aspire to offer a national alternative.

History teaches that successful alliances are built not merely on opposition to a common rival but on shared objectives, trust and discipline. While INDIA bloc leaders remain united in their criticism of the ruling establishment, they appear divided on leadership, strategy and long-term vision.

If the opposition hopes to emerge as a credible alternative in 2029, it must first address the cracks within its own ranks. Political unity begins at home.

Dear Gen Z, you don't need to be treated like cockroaches

Jan Jan Vichar

...✍Shashi Tharoor

Dear Gen Z Indians who signed up to the "Cockroach Janta Party": It is impossible to look at the current landscape of India - the headlines, the stories emerging from exam centres, and the raw, unfiltered conversations flooding social media- without feeling the immense weight of the collective frustration gripping your generation.

On May 16, Abhijeet Dipke posted an invitation to join the "Cockroach Janta Party". Five days later, he had 20 million Instagram followers. His satirical movement has captured the imagination of Gen Z and others like you, frustrated by the inadequacies of our political system and its failure to meet your needs. Instagram is your town square. But it is not a ballot box.

To those of you feeling lost, angry, and disillusioned: your pain is seen, and your anger is heard. The reasons you signed up for the CJP are valid. When you dedicate years of your life to preparation, sacrificing sleep, social connection, and mental well-being for a dream, the news of paper leaks and system failures is not just a news headline — it is a betrayal of your time, your effort, and your future. The tragic news of students losing their lives in despair is a devastating reminder that the "rotten system" isn't just an abstract concept; it has real, human consequences that cut to the core of our society. But there is a danger in mistaking an outlet for your frustration as the solution to your problems. It is not.

The emergence of movements like the CJP offers a powerful, albeit heartbreaking, piece of political theatre. It captures the visceral feeling of being treated as disposable by a system that seems unresponsive to the struggles of ordinary citizens. It seems a safe space for those of you dealing with the crushing weight of unemployment, the rising cost of living, and the narrowing of the pathways to quality education. But while venting and finding solidarity in this movement is necessary for emotional release, there is a danger in stopping there. History shows us that while rage can ignite a fire, it requires a steady hand and a clear strategy to build a structure that endures. Instagram alone doesn't do it.

If you want more than just temporary attention, you must channel this energy into something that forces the system to bend. That is why working within the system you feel has failed you and pushing against the existing system so that it serves your needs is the most effective path forward.

First, as an MP myself, let me tell you that you can make your representatives accountable. The system is not a monolith; it is comprised of people who are, at least in theory, beholden to you. Flood the offices of your local MLAs and MPs with structured grievances and demand they take it up with the authorities. Use the RTI (Right to Information) Act to demand transparency regarding exam conduct and hiring quotas. When enough voices demand an answer on the record, silence becomes a political liability.

Next, you can leverage institutional pressure, even if you feel the institutions of government are not working for you. Mass media thrives on narratives. When your dissent is organised around specific, actionable demands (for example, specific policy reforms for NTA oversight, concrete job creation plans, time-bound commitment to fill existing vacancies), the media is forced to cover the solution, not just the scandal. And parliamentarians are forced to react as well, to join a debate inside and outside the legislature about the ways forward. Don't forget there's a lot that still works well in India. Make it work for you.

But you must professionalise your advocacy. The most successful movements in democratic history didn't just shout; they organised, they drafted, they lobbied, they agitated. Engage with student unions, legal collectives, and policy advocacy groups that know how to draft petitions and fight cases in courts. Turning "this is unfair" into "this violates Article 14 or Article 21" makes you impossible to ignore. If all else fails, take your case to court. But for that, you need to have a case, not just a set of slogans or memes expressing your frustrations.

And don't forget the power of participation. True change often happens in the mundane processes of daily politics. By participating constructively in local civic bodies and engaging in informed voter mobilisation, you strip the "system" of its comfortable default inertia. When you become better informed and more organised than the incumbents, you become a force that has to be negotiated with.

The temptation to opt out of the system is always there. It is easy to feel that the game is rigged and the odds are insurmountable. But remember: you are the demographic majority in a nation that is still defining its identity. You have the numbers, the digital fluency, and the moral high ground to shift the needle on the national compass. Your aspirations reflect the nation's future. Your generation will soon be in charge. Channel your demands constructively, and you can win.

One more word. Frustration is not an end in itself. You don't need to be treated like cockroaches, and you don't need to adopt the label as your permanent identity. Work with mainstream politicians of your choice, of all parties, to be the rebuilders of a system that respects the dignity of every student and every job-seeker.

Don't let your anger burn out into apathy. Let it be the fuel for a long-term, persistent demand for the changes you deserve. The system will only change when those who suffer the most from its failings decide to challenge them from the inside, not while staying outside.

Stay vocal, stay organised, and most importantly, stay resilient. You are the future of this country, whether the current system likes it or not. Seize the opportunity. Don't give up — and don't just be content with venting on Instagram. Many of us are listening, but you yourselves must act.

Adulthood in Waiting

The New Reality of Young India

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

As children, most of us imagine adulthood as a stage of freedom, independence and achievement. We dream of a successful career, financial stability, a home of our own and a secure future. However, for a growing number of young Indians, adulthood is turning into a prolonged waiting period, where major life decisions are being postponed due to economic uncertainty and changing social realities.

Across India, many members of Generation Z and the millennial generation are delaying important milestones such as marriage, home ownership, higher education and even starting a family. The reasons are not difficult to understand. Rising living costs, expensive housing, increasing educational expenses and an unpredictable job market have made long-term planning more challenging than ever before. Even those with stable jobs often hesitate to make major financial commitments, fearing future uncertainties.

The impact of the COVID-19 pandemic continues to be felt by many young people. Those who entered the workforce during or after the pandemic faced disruptions in education, reduced employment opportunities and changing workplace dynamics. At the same time, rapid technological changes and the rise of artificial intelligence have created new concerns about job security and career growth.

Economic pressures are also reshaping personal aspirations. Many young professionals are choosing to save money rather than spend on weddings, property or business ventures. Others are postponing higher studies until they feel more financially secure. What previous generations considered natural steps in life are now carefully calculated decisions.

Yet this trend should not be viewed entirely negatively. Today's youth are increasingly focused on financial responsibility, mental well-being and work-life balance. They are questioning traditional definitions of success and creating their own paths. Rather than rushing into commitments, many prefer to build a stronger foundation before taking the next step. India's young generation remains ambitious and optimistic. Their dreams have not disappeared; they have merely been delayed. The challenge for policymakers, educators and employers is to create an environment where young people feel confident about the future.

India's Young Professionals Are Choosing a Better Life Over Bigger Paychecks

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi

For generations, India's biggest cities have symbolized ambition and opportunity. From the crowded streets of Mumbai to the technology corridors of Bengaluru and the corporate hubs of Delhi NCR, millions of young Indians have migrated to metropolitan centers in pursuit of better jobs, higher salaries and brighter futures. The belief was simple: success lay in the metros.

Today, however, a quiet but significant shift is taking place.

An increasing number of young professionals are rethinking what success means. While career growth remains important, quality of life is emerging as an equally powerful consideration. Long commutes, soaring housing costs, pollution, traffic congestion and the stress of urban living are prompting many to look beyond the traditional destinations of employment.

The rise of remote work and digital connectivity has accelerated this transformation. Professionals in fields such as information technology, digital marketing, media, education, consulting and design no longer need to be physically present in major metropolitan offices to contribute effectively. As a result, many are returning to their hometowns or relocating to smaller cities where living costs are lower and social support systems are stronger.

This trend is particularly significant for India's Tier-2 and Tier-3 cities. Places that were once considered peripheral to the country's economic growth are now attracting skilled professionals, entrepreneurs and startups. Improved internet connectivity, expanding infrastructure and growing consumer markets have made smaller cities increasingly attractive destinations for both workers and businesses.

The implications extend beyond individual lifestyle choices. A more balanced distribution of talent can contribute to regional development, reduce pressure on overcrowded metropolitan centers and create new opportunities in emerging urban areas. Local economies benefit from increased spending, greater demand for services and the infusion of skilled human resources.

At the same time, the shift presents challenges. Smaller cities must strengthen infrastructure, healthcare, education and public services to accommodate growing populations and sustain economic momentum. Policymakers and local administrations will need to ensure that development keeps pace with changing demographic and employment patterns.

For employers, the evolving preferences of the workforce are also reshaping recruitment and retention strategies. Flexible work arrangements, hybrid models and decentralized operations are becoming essential tools for attracting talent. Companies are increasingly recognizing that employees value work-life balance, affordability and personal well-being alongside salary packages.

The changing aspirations of India's youth reflect a broader social transformation. Success is no longer measured solely by income or a prestigious metropolitan address. Increasingly, it is being defined by a healthier balance between professional achievement and personal fulfillment.

As India continues its journey toward becoming a major global economic power, this emerging migration pattern may play a crucial role in shaping the country's future. The story of development is no longer confined to a handful of metropolitan centers. It is expanding into smaller cities and towns where ambition, opportunity and quality of life are finding a new equilibrium.

The message from India's young professionals is clear: a better life is not always found in the biggest city. Sometimes, it is found in a place that offers the space to grow, work and live with dignity and balance.

Papon Launches *'Apne Khilaaf'*

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

Renowned Assamese singer and composer Papon has unveiled Apne Khilaaf, the first song from his much-anticipated ghazal album Mehfilz with Papon. The release marks the beginning of a unique musical journey aimed at bringing the timeless charm of ghazals closer to contemporary audiences.

Released on June 2, Apne Khilaaf introduces listeners to the larger Mehfilz with Papon series, which combines music, poetry, and personal storytelling in an intimate format. The accompanying music video recreates the atmosphere of a traditional mehfil within a cozy living-room setting, featuring special appearances by actors Pankaj Tripathi and Meiyang Chang among a select audience.

Sharing his excitement on social media, Papon described the project as the realization of a long-cherished dream. He said he had always wanted to create a space where music, poetry, and emotions could come together in their purest form, and that Mehfilz with Papon represents that vision.

Speaking about the album, Papon revealed that the project had been in development for several years. He noted that traditional mehfils had played a significant role in shaping his musical journey and inspired the concept behind the album. According to him, every aspect of the project carries a deep personal connection.

The song has been composed by Papon, while the lyrics have been penned by acclaimed lyricist Irshad Kamil. The duo sought to preserve the beauty of classical ghazal writing while making the language and emotions more accessible to modern listeners. The album explores contemporary themes of love, relationships, and human emotions, with the aim of connecting with audiences across generations.

Apne Khilaaf is the first release from Mehfilz with Papon, and several more tracks from the album are expected to be unveiled in the coming weeks.

The T-Shirt Revolution

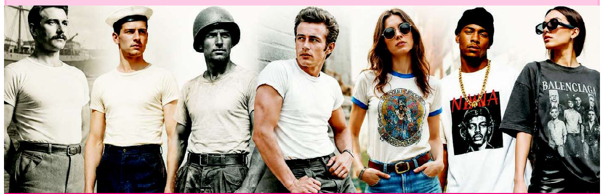

From Undergarment to Fashion Icon

Jan Jan Vichar
...✍Feature Desk

Today, the T-shirt is one of the most popular and versatile garments in the world. Comfortable, affordable, and stylish, it has become a wardrobe essential across all age groups. However, its journey began not as a fashion statement but as a simple men's undergarment.

The origins of the T-shirt can be traced back to T-shaped cotton and linen garments worn beneath expensive clothing to absorb sweat and protect outerwear. Its popularity grew in the nineteenth century, and in 1913 the United States Navy officially adopted the white cotton T-shirt as standard underwear for sailors.

The transformation from undergarment to everyday wear accelerated during World War II, when American soldiers frequently wore T-shirts. After the war, images of servicemen in plain white tees made the garment a symbol of strength and masculinity.

The real breakthrough came in the 1950s when Hollywood stars such as Marlon Brando and James Dean popularized the T-shirt on screen. By the 1970s, it had become a unisex fashion item.

Today, printed slogans, artwork, and designer labels have turned the T-shirt into a powerful medium of self-expression, proving that simplicity never goes out of style.

Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com,Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ●Editor : Dhaneswar Choudhary